INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

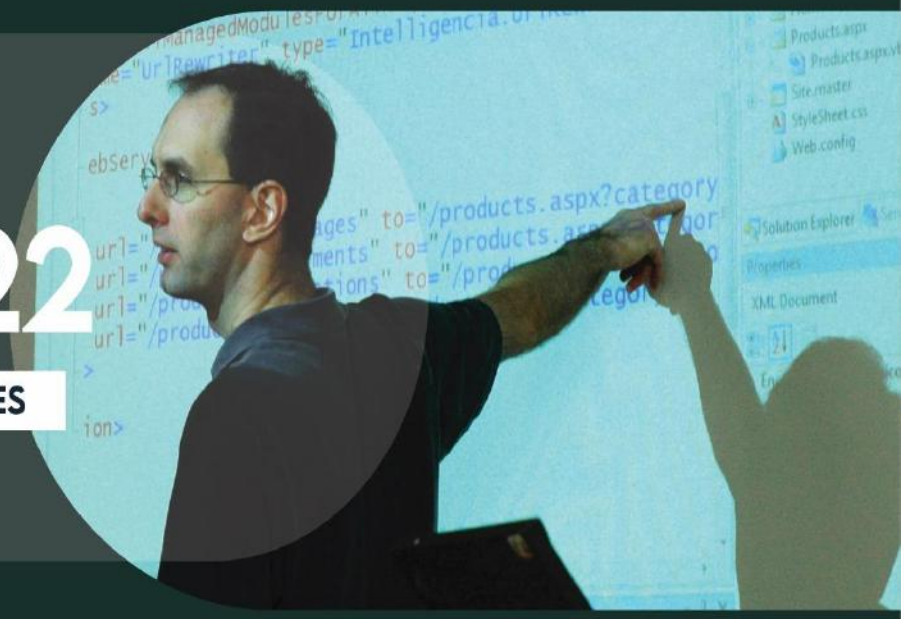

2021-22

HANDWRITTEN NOTES

LATEST EDITION

राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक

(शिक्षक)

COMPUTER INSTRUCTOR

[भाग -1]

कला एवं संस्कृति + इतिहास + भूगोल + करंट अफेयर्स (राजस्थान) + शिक्षाशास्त्र

कला एवं संस्कृति

1. राजस्थान में चित्रकला
2. लोकनृत्य एवं कला
3. संप्रदाय एवं लोक संत
4. लोक देवता और लोक देवियाँ
5. राजस्थान में हस्त शिल्प कला
6. मेले एवं त्यौहार
7. प्रमुख लोक संगीत
8. राजस्थान की बोलियाँ
9. राजस्थान का साहित्य
10. सामाजिक रीत रिवाज एवं प्रथाएँ
11. राजस्थान में ठिकाना व्यवस्था
12. वस्त्र एवं आभूषण (पहनावे)
13. राजस्थान में जनजातियाँ

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान इतिहास

1. राजस्थान इतिहास के स्त्रोत
2. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं
3. गुर्जर प्रतिहार वंश
4. मेवाड़ का इतिहास
5. मारवाड़ का इतिहास
6. राजस्थान के अन्य वंश
7. राजस्थान में मुगल राजवंश
8. राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां
9. 1857 की क्रांति
10. किसान एवं जनजाति आंदोलन
11. राजस्थान में प्रजामंडल
12. राजस्थान का एकीकरण

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान का भूगोल

1. सामान्य परिचय
2. भू – आकृतिक प्रदेश
3. नदियां एवं झीलें
4. जलवायु
5. वनस्पति एवं वन्य जीव अभ्यारण्य , वन्यजीव एवं संरक्षण
6. राजस्थान में मृदा
7. जनसंख्या
8. बेरोजगारी
9. गरीबी
10. राजस्थान में खनिज
11. पशु संसाधन
12. राजस्थान की कृषि
13. राजस्थान में उद्योग
14. प्रमुख परियोजनाएं –
    - मुख्य सिंचाई एवं नदी घाटी परियोजनायें

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- मरुस्थल एवं बंजर भूमि के विकास के लिए परियोजनाएं

- राजस्थान समय सामयिकी (करंट अफेयर्स)

शिक्षा शास्त्र (Pedagogy)

1. मनोविज्ञान – एक परिचय
2. वृद्धि एवं विकास की संकल्पना
3. अधिगम / सीखना/सिखाना
4. अधिगम में आने वाली कठिनाइयाँ
5. अभिरुचि , स्मृति
6. बालकों में चिन्तन
7. अभिप्रेरणा
8. बुद्धि
9. व्यक्तित्व
10. समावेशी शिक्षा
11. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या – 2005

FREE SAMPLE

12. नि : शुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009

13. क्रियात्मक – अनुसन्धान

14. शिक्षण अधिगम

15. आंकलन, मापन मूल्यांकन

- सतत एवं समग्र मूल्यांकन

16. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

17.प्रसिद्ध पुस्तकें व लेखक

FREE SAMPLE

नोट -

प्रिय छात्रों, Infusion Notes के राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक के sample notes आपको पीडीऍफ़ format में "फ्री" में दिए जा रहे हैं और complete Notes आपको Infusion Notes की website या (Amazon/Flipkart) से खरीदने होंगे जो कि आपको hardcopy यानि बुक फॉर्मेट में ही मिलेंगें, या नोट्स खरीदने के लिए हमारे नंबरों पर सीधे कॉल करें (8233195718, 9694804063) । किसी भी व्यक्ति को sample पीडीऍफ़ या complete Course की पीडीऍफ़ के लिए भुगतान नहीं करना है। अगर कोई ऐसा कर रहा है तो उसकी शिकायत हमारे Phone नंबर 8233195718, 0141-4045784 पर करें, उसके खिलाफ क़ानूनी कार्यवाई की जाएगी।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 2

लोकनृत्य एवं कला

राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य

लोकनृत्य वह कला है, जिसके द्वारा हाव-भाव, अंग संचालन, भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनोदशा को व्यक्त किया जाता हैं। राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया है।

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **सामाजिक-धार्मिक नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

विभिन्न जातीयों के नृत्य एक नजर :-

- **भील :-** गवरी/राई., युद्ध, द्विचकरी, गोसाई., घूमरा, साद, पालीनोच, हथमनी, नेजा नृत्य।
- **गरासिया :-** रायण, मोरिया, जवारा, गौर, मॉदल, कूद. लूर, वालर नृत्य
- **कचौड़ी :-** मावलिया, होली नृत्य।
- **मेव :-** रणबाजा, रतदई. नृत्य।
- **रेबारी :-** गैर, लूम्बर नृत्य।
- **सहरिया :-** लहँगी, शिकारी नृत्य।
- **भील-मीणा :-** नेजा नृत्य।
- **कंजर :-**घोड़ी. लहरी, चकरी. धाकड़ नृत्य।
- **गुर्जर :-** चरी नृत्य।
- **कालबेलिया :-** -शंकरिया. पणीहारी. बागडियां, इण्डोणी नृत्य।

I. राजस्थान का क्षेत्रीय लोकनृत्य

- **घूमर –** राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका 'घूमर' नृत्य राजस्थान के 'लोकनृत्यों की आत्मा' कहलाता है। यह नृत्य सभी मांगलिक अवसरों पर राज्य के अधिकांश भागों विशेषकर जयपुर एवं मारवाड़ क्षेत्र में किया जाता है। 'घूमर' शब्द की उत्पत्ति 'घुम्म' से हुईहै, जिसका अर्थ होता है, 'लहंगे का घेर'। घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर 'घूमर लोकगीत' की धुन पर नाचती हैं। इसमें मंद गति से कहरवा ताल बजता है। बालिकाओं द्वारा किया जाने वाला घूमर नृत्य झूमरियो' कहलाता है।
- **ढोल नृत्य –**राजस्थान के जालोर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक नृत्य, जिसमें नर्तक विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं। यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में कई. ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं। ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।
- **बिंदौरी नृत्य –**राज्य के झालावाड़ क्षेत्र में होली या विवाह के अवसर पर गैर के समान किया जाने वाला लोकनृत्य, जिसमें पुरुष भाग लेते हैं।
- **झूमर नृत्य –** हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता है।
- **चंग नृत्य –**शेखावाटी क्षेत्र में होली के समय पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक लोकनृत्य, जिसमें प्रत्येक पुरुष चंग की थाप पर गाते हुए नाचते हैं।
- **गींदड़ –** शेखावाटी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय एवं बहुप्रचलित लोकनृत्य, जो होली से पूर्व 'डांडा रोपण' से प्रारम्भ होकर होली के बाद तक चलता है। गींदड़ नाचने वालों को 'गींदड़िया' तथा स्त्रियों का स्वांग करने वालों को 'गणगौर' कहा जाता है। नृत्य में विभिन्न प्रकार के स्वांग करते हैं जिसमें सेठ-सेठानी, दुल्हा-दुल्हन, डाकिया-डाकिन, पठाः व सरता के स्वांग प्रमुख हैं।
- **घुड़ला नृत्य –**मारवाड़ क्षेत्र में होली के अवसर पर प्रचलित इस लोक नृत्य के साथ घुड़ला गीत गाए जाते हैं, जिसमें बालिकाएँ मिट्टी का बर्तन लेकर नाचती हुईघर-घर जाकर तेल माँगती हैं। इस नृत्य में गाया जाता है—"सुहागण घाल तेल, घुड़लौ घुमे छै।" जोधपुर नरेश राव सातल की याद में यह नृत्य किया जाता है जिन्होंने अजमेर के

सामंत मल्लू खाँ के सेनापति घुड़ले खाँ को मारकर पीपाड़ से अगवा की गई. तीजणियो को मुक्त कराया था।

अग्नि नृत्य – बीकानेर के जसनाथी सिद्धों द्वारा 'फतै-फतै' के उद्घोष के साथ तपते अंगारों पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों (भक्तों) को .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021	91 of 160	

	1st शिफ्ट		
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE

अध्याय – 5

लोक देवता और लोक देवियाँ

लोक देवियाँ

राजस्थान के प्रमुख लोक देविया और देवता निम्नलिखित है -

करणी माता

- बीकानेर के राठौड़ शासकों की कुलदेवी। 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात। जन्म सुआप गाँव के चारण परिवार में।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।

करणी जी के काबे

- इनके मंदिर के चूहे । यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल
- राव कान्ह ने इनकी गायों पर हमला किया ।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मन्दिर में चांदी के किवाड़ भेंट किया ।
- इनके बचपन का नाम रिद्धुबाई. था।
- मठ – देवी के मन्दिर को मठ कहते हैं ।
- अवतार - जगतमाता
- उपनाम – काबा वाली माता, चूहों की देवी ।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ाजी' हैं । करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर हैं ।करणी देवी का एकरूप 'सफेदचील' भी है ।
- 'नेहड़ी' नामक दर्शनीय स्थल है जो करणी माता के मंदिर से कुछ दूर स्थित है ।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- करणी जी के आशीर्वाद एवं कृपा से ही राठौड़ शासक 'रावबीका' नेबी का ने रमें राठौड़ वंश की स्थापना की थी । चौत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता हैं ।

जीण माता -

- चौहान वंश की आराध्य देवी । ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी। मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है। मंदिर का निर्माण रैवासा (सीकर) में पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढ़ाई. प्याला मदिरा पान करती हैं ।इसे प्रतिदिन ढाई. प्याला शराब पिलाई. जाती है ।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चौत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ हैं ।इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहतीहैं ।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा हैं ।यह गीत कनफटे जोगियों द्वारा डमरू एवं सारंगी वाद्य की संगत में गाया जाता है।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है ।

कैला देवी -

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी । इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं ।
- मंदिर :- त्रिकूटपर्वतकीघाटी (करौली) में। यहाँ नवरात्रा में विशाल लक्खी मेला भरता है।
- कैलादेवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चौत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता हैं ।कैलादेवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है ।

शिला देवी -

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी । इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है ।

अन्नपूर्णा -

- शिलामाता की यह मूर्तिपाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित हैं ।महाराजा मानसिंह पं. बंगाल के राजा के दार से सन् 1604 में मूर्ति लाए थे।

- इस देवी को नरबलि दी जाती थी तथा यहाँ भक्तों की मांग के अनुसार मन्दिर का चरणामृत दिया जाता हैं ।मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोईनहीं जीत सका।

जमुवायमाता-

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी । इनका मंदिर जमुवारामगढ़, जयपुर में है। दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

आई.जी माता -

- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी । इनका मंदिर बिलाड़ा (जोधपुर) में है। मंदिर 'दरगाह' व थान 'बड़ेर' कहा जाता है। ये रामदेवजी की शिष्या थी। इन्हें माजी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती तथा एक दीपक की लौ से के सरटपकती रहतीहैं ।इनके मन्दिर का पूजारी दीवान कहलाताहै ।

राणी सती -

- वास्तविक नाम 'नारायणी'। 'दादीजी' के नाम सेलोक प्रिय। झुंझुनूँ में राणी सती के मंदिर में हरवंश भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है ।
- इनके पति का नाम – तन धनदास

नोट-

- इन्होंने हिसार में मुस्लिम सैनिकों को मारकर अपने पति की मृत्यु का बदला लिया और स्वयं सती हो गयी कुलदेवी ।
- अग्रवाल समाज की कुलदेवी।
- राज्य सरकार ने ।९४४ में इस मेले पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि ।९४७ में देवराला (सीकर) में "रूपकंवर" नामक राजपूत महिला सती हो गयी थी।

आवड़ माता –

- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुलदेवी । इनका मंदिर तेमड़ी पर्वत (जैसलमेर) पर है। जैसलमेर के तेमड़ी पर्वत पर एक.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	

FREE SAMPLE

U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 6

मेले एवं त्यौहार

हिन्दू कैलेंडर के अनुसार देशी महीने

1. **चैत्र** –मार्च-अप्रेल
2. **वैशाख** –अप्रेल -मई.
3. **ज्येष्ठ** –मई.-जून
4. **आषाढ़** –जून-जुलाई.
5. **श्रावण**-जुलाई.- अगस्त
6. **भाद्रपद**-अगस्त -सितम्बर
7. **अश्विन**-सितम्बर- अक्टूबर
8. **कार्तिक** – अक्टूबर –नवम्बर
9. **मार्गशीर्ष** –नवम्बर – दिसम्बर
10. **पौष** –दिसम्बर- जनवरी
11. **माघ** –जनवरी-फरवरी
12. **फाल्गुन** –फरवरी –मार्च

हिंदुओं के प्रमुख त्यौहार

धुलंडी - यह होली के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा(एकम) को मनाई. जाती है।होलिका दहन बुराई. पर अच्छाई. की जीत को दर्शाता है। वहीं दूसरी दिन को**धुलेंडी**या धूलिवंदन भी कहा जाता है। इस दिन लोग एक दुसरे पर रंग, गुलाल और अबीर आदि फेंकते है और ढोल बजा कर होली के गीत गाते है साथ ही घर-घर जाकर अपने दोस्तों और परिवारों आदि को भी रंग लगाया जाता है।

गणगौर - यह राजस्थान के सबसे खास त्योहारों में से एक है और राजस्थानियों के लिए यह त्यौहार एक विशेष महत्व रखता है। इस त्यौहार में सुहागन स्त्रियाँ शिव-पार्वती

FREE SAMPLE

की पूजा करती हैं। गणगौर के इस त्यौहार के दौरान युवा लड़कियां अपने सर्वश्रेष्ठ संगठनों में खुद को सजाती हैं और अपनी पसंद के जीवनसाथी के लिए देवी से आशीर्वाद मांगती हैं। दूसरी ओर विवाहित महिलाएं अपने पतियों के कल्याण के लिए प्रार्थना करती हैं। गणगौर त्यौहार में स्त्रियां अच्छे पति का वरदान पाने के लिए पूजा करती हैं। गणगौर का त्यौहार पार्वती के "गौने" का सूचक है। गणगौर का त्यौहार लगभग 18 दिन तक (चैत्र कृष्ण एकम से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया) चलता है। इन दिनों सर्वाधिक घूमर नृत्य किया जाता है। जयपुर की गणगौर प्रसिद्ध है। धींगा गणगौर एवं बेंतमार मेला जोधपुर में लगता है। बिना ईसर की गणगौर जैसलमेर में पूजी जाती है। उदयपुर के महाराणा राजसिंह प्रथम ने अपनी छोटी महारानी को प्रसन्न करने के लिए रीति के विरुद्ध जबरदस्ती वैशाख कृष्ण तृतीया को गणगौर मनाने का प्रचलन प्रारंभ किया था जिससे इसका नाम धींगा गणगौर प्रसिद्ध हुआ। राजस्थान में नाथद्वारा क्षेत्र में चेत्र शुक्ल पंचमी को गुलाबी गणगोर मनाई. जाती है ।

शीतला अष्टमी - यह त्यौहार चैत्र कृष्ण अष्टमी को मनाया जाता है।शीतलाअष्टमी हिन्दुओं का महत्वपूर्ण त्यौहार है।इस दिन शीतला माता को ठंडा भोग चढ़ाया जाता है एवं शीतला माता की पूजा की जाती हैऔर व्रत भी रखा जाता है।समस्त भोजन सप्तमी की संध्या को बनाकर रखा जाता है।इस दिन बासी खाना खाया जाता है जिस से इसे 'बासिड़ा' कहा जाता है ।बच्चो के चेचक निकलने पर शीतला माता की पूजा की जाता है। इसलिए शीतला माता को बच्चों की सरंक्षिका भी कहा जाता है।शीतलामाता का मंदिर चाकसू-जयपुर में हैं ।शीतला माता का वाहन गधा है माता के पुजारी कुमार जाती के लोग होते है

घुड़ला का त्यौहार – यह त्यौहारजोधपुर , बाड़मेर, जैसलमेर आदि जिलों मेंचैत्र शुक्ल अष्टमी से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।

घुड़ला त्यौहार का आरम्भ – कोसाणा गांव में लगभग 200 कुंवारी कन्याएँ गणगौर पर्व की पूजा कर रही थी | घुडला खान मुसलमान सरदार अपनी फ़ौज के साथ निकल रहा था, उसने सभी बच्चियों का अपहरण कर लिया, इसकी सूचना गाँव के कुछ घुड़सवारों ने जोधपुर के राव सातल सिंह राठौड़ जी को दी। राजपुतो की तलवारों ने भागती मुग़ल

सेना का पीछा कर ख़ात्मा कर दिया । राव सातल सिंह जी ने तलवार के भरपुर वार से एक ही झटके में दुष्ट घुडला खान का सिर धड़ से अलग कर दिया। राव सातल सिंह ने सभी बच्चियों को मुक्त करवाकर उनके सतीत्व की रक्षा की। गांव वालों ने उस दुष्ट घुडला खान का कटा हुआ सिर बच्चियों को सोंप दिया।बच्चियो ने घुडला खान के सिर को घड़े पर रख कर उस घड़े मे जितने घाव घुडला खान के शरीर पर हुये, उतने छेद किये और फिर पुरे गाँव मे घुमाया एवं हर घर मे रोशनी की गयी। तभी से घुडला त्यौहार मनाया जाता हैं ।

नववर्ष - यह चैत्र शुक्ल एकम को मनाया जाता है। इस दिन हिन्दुओं का नया वर्ष शुरू होता है।हिंदी पंचांग में इस तिथि का बहुत अधिक महत्व है।

वसन्तीय नवरात्र - यह नवरात्र चैत्र शुक्ल एकम से नवमी तक चलते है। इसमें इन नौं दिनों में माँ दुर्गा की पूजा की जाती है।

अरुंधति व्रत - यह व्रत चैत्र शुक्ल एकम से शुरू होता है और चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।

अशोकाष्टमी - यह चैत्र शुक्ल अष्टमी को मनाया जाता है। इस दिन अशोक वृक्ष की पूजा की जाती है।

रामनवमी - यह त्यौहार अंतिम नवरात्र (चैत्र शुक्ल नवमी) के दिन भगवान श्री राम के जन्म दिन पर मनाया जाता है। इस दिन रामायण का पाठ किया जाता है। व्यापारी लोग इस दिन अपने बही खाते बदलते है। श्रदालुगण सरयू नदी में स्नान करके पुण्य लाभ कमाते है।

आखा तीज/अक्षय तृतीया - यह वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है। यह एक अबूझ सावा है। इस दिन राजस्थान में सर्वाधिक बाल विवाह होते है। इस दिन किसान लोग अपने हल एवं सात अन्ना की पूजा करते है और शीघ्र वर्षा होने की कामना करते है। इसी दिन सतयुग एवं त्रेतायुग का आरम्भ माना जाता है।

वट सावित्री व्रत (बड़मावस) *- यह ज्येष्ठ अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियां व्रत रखकर बड़ या बरगद की पूजा कर अपने पुत्र एवं पति की आरोग्यता के लिए प्रार्थना करती है।*

निर्जला एकादशी*- यह ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को मनाया जाता है।निर्जला एकादशी सभी 24 एकादशियों में सबसे पवित्र .....*

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)

राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	

U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 10

सामाजिक रीत रिवाज एवं प्रथाएँ

सोलह संस्कार

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमन्तोन्नयन
4. जातकर्म
5. नामकरण
6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन
8. चूडाक्रम या जडूला
9. कर्णवेध
10. विद्यारम्भ
11. उपनयन
12. वेदारम्भ
13. केशान्त या गोदान
14. समावर्तन या दीक्षान्त
15. विवाह
16. अंत्येष्टि

हमारे यहां जीवन के हर मोड पर किसी न किसी रीति रिवाज का निर्वहन किया जाता है। इनमें से कुछ प्रमुख संस्कार , रिवाज इस प्रकार है।

1. गर्भाधान

जब किसी महिला द्वारा बार, गर्भाधारण किया जाता है, तब महिलाओं द्वारा मांगलिक गीत गाये जाते है।

2. आठवाँ पूजन

गर्भाधारण के आठवे महीने में आठवाँ पूजन किया जाता है देवताओं से मन्नत मांगी जाती है। कि जच्चा बच्चा स्वस्थ व सुरक्षित रहें। इस अवसर पर गर्भाधारण करने वाली महिला के पीहर वाले विशेष रूप से उपस्थित रहते हैं।

3. जन्म घूंटी पिलाना

बच्चे के पैदा होने पर परिवार की किसी वृद्ध महिला द्वारा बच्चे को जन्म घंटी पिलाई. जाती है।

4. कांसी की थाली बजाना

बच्चा पैदा होते ही परम्परानुसार कांसी की थाली डंडे से बनाई. जाती है।

5. कुआँ पूजन (जलवायु पूजन)

बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद जच्चा को लेकर देवी देवताओं के गीत गाते हुए पनघट या कुएं पर पहुंचा जाता है। जहाँ कुएं की पूजा की जाती है। इसे जलवा पूजन भी कहा जाता है।

6. नामकरण संस्कार

व्यक्ति के कुल सोलह संस्कार होते हैं, उनमें नामकरण भी एक है बच्चा पैदा होने पर ज्योतिषी से बच्चे का नामकरण करवाया जाता है। यह संसकरण प्रायः जन्म के ग्यारहवें दिन किया जाता है। पण्डित द्वारा जन्म घड़ी एवं नक्षत्रों के हिसाब से राशि का निर्धारण करते हुए नामकरण किया जाता है। कुल बारह राशियां होती है और प्रत्येक राशि में नौ नौ अक्षर होते हैं। इन अक्षरों में से ही किसी एक शुभ अक्षर से आरम्भ होने वाला नाम रख लिया जाता है।

7. आख्या

बच्चे के जन्म के आठवे दिन बहिन बेटियों को बुलाया जाता है आख्या की रस्म बहिन बेटियों द्वारा पूरी की जाती है। पूजन होता है, नवजात शिशु को साथिया भेंट किया जाता है स्वास्तिक एवं मांगलिक चिन्ह है। जो शुभ होकर विजय का प्रतीक है।

४. मुण्डन संस्कार

जब बच्चा साल भर में अधिक बड़ा हो जाता है तब किसी शुभ दिन बच्चे के सिर के बाल उतारते हुये मुण्डन किया जाता है। सामान्यतः यह मुण्डन किसी तीर्थस्थल, देवस्थान, देवी देवताओं के मंदिर में सम्पन्न होता है।

१. सगाई.

लडका या लडकी के परिजन किसी चारण, भाट या पुरोहित को मध्यस्थ बनाकर सगाई. की बात करने भेजते हे जब दूसरा पक्ष सगाई. के प्रस्ताव को स्वीकर कर लेता है तो इसे लडका रोकना कहते है। इसे दस्तूत माना जाता है। जब रिश्ता पक्का हो जाता है। जब पक्की सगाई. की रस्म निभाई. जाती है। सगाई. के दौरान प्रायः लडकी वाले लडके वाले के .....

नोट *– प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

• राजस्थान की प्रमुख प्रथाएं

- **सती प्रथा** - पति की मृत्यु पर पत्नी का उसकी चिता के साथ जलकर मौत का वरण करना ही 'सती प्रथा' कहलाता हैं । इस प्रथा को सहगमन/सहमरणा/अणवारोहण के नाम से भी जाना जाता हैं ।

  राज्य में सर्वप्रथम सती होने का प्रमाण वि.सं. 861 ई.के घटियाला शिलालेख (जोधपुर) से मिलते हैं, जबकि राज्य में सती प्रथा की अंतिम घटना दिवराला गांव (सीकर) को मानी जाती हैं । यह घटना 1987 ई.0 की हैं । इस घटना के बाद राजस्थान सरकार ने सती निवारण अधिनियम पारित किया ।

  - आजादी से पहले राज्य में सर्वप्रथम सती प्रथा पर बूंदी रियासत ने रोक लगाई थी ।

  - राजा राममोहनराय के प्रयासों से लॉर्ड विलियम बैंटिक ने सन् 1829 में सती प्रथा को रोकने के लिए सरकारी आदेश जारी किया था । इस आदेश के बाद अलवर रियासत ने सर्वप्रथम सती प्रथा पर रोक लगाई थी । भारत के शासक मुहम्मद तुगलक व अकबर ने भी सती प्रथा पर रोक लगाने के प्रयास किए थे ।

  राज्य में सबसे प्रसिद्ध सती प्रथा की घटना 1652 ई.में हुई। इसमें झुंझुनू के तन धन दास की पत्नी नारायणी देवी सती हुईथी । नारायणी देवी को रानी सती या सती दादी के नाम से भी जाना जात हैं । इस परिवार की कुल 13 महिलाएं सती हुई थी ।

- **अनुमरण प्रथा** - पति के शव के साथ सती न होकर उसके किसी चिन्ह (वस्तु) के साथ सती होना ही 'अनुमरण' कहलाता हैं । ऐसी 'सती' को महासती कहते हैं । मारवाड़ के राजा राव मालदेव की पत्नी उमादे जो कि जैसलमेर के राजा लूणकरण की पुत्री थी । यह उमादे भी मालदेव की पत्नी के साथ सती हुईथी ।

- **अणख प्रथा** - सती होने वाली महिला अपने परिवार के सदस्यों को कुछ उपदेश दिया करती थी, जिसे ही अणख प्रथा कहा जाता था ।

- **जौहर प्रथा** - युद्ध में जीत की आशा ना देखकर राजपूत महिलाएं अपने स्त्रीत्व की रक्षा हेतु अग्नि या जल में कूदकर अपनी जान दे देती थी, इसे ही जौहर प्रथा कहते हैं ।

- ***केसरिया प्रथा*** - *राजपूत योद्धे के सरिया वस्त्र पहनकर युद्ध करते हुए, वीरगति को प्राप्त हो जाते थे, इसे ही केसरिया करना कहते हैं ।*
- ***साका*** - *यदि जौहर और केसरिया किसी युद्ध के समय दोनों होते हैं, तो इसे साका कहते हैं ।*
- ***अर्द्धसाका*** - *यदि किसी युद्ध में केसरिया तो हुआ, लेकिन 'जौहर' नहीं हुआ तो इसे 'अर्द्धसाका' कहते हैं ।*
- ***डावरिया प्रथा*** - *राजाओं की लड़की के शादी में उनके साथ दहेज के रूप में अन्य कुंवारी कन्याएं दी जाती थी, जिसे 'डावरिया' कहा जाता था ।*
- ***नाता प्रथा*** - *पुनर्विवाह को ही नाता प्रथा कहते हैं ।*
- ***कोथला*** - *बेटी के पिता लड़कों वालों को बुलाकर कुछ उपहार देता हैं, इसे ही कोथला कहा जाता हैं ।*
- ***समठुणी*** - *विवाह के उपरांत लड़की के पिता द्वारा बारातियों को विदाई. के समय कुछ भेंट प्रदान की जाती हैं । इसे ही समठुणी कहते हैं ।*

त्यागप्रथा - *राजकुमारियों के विवाह के अवसर पर राजा या महाराजाओं द्वारा चारण साहित्याकारों को दिया जाने वाला उपहार । इसे ही 'पोलपात बारहठ' कहा जाता हैं । इस पर सर्वप्रथम 1841 ई.में जोधपुर.....*

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अध्याय – 12

वस्त्र एवं आभूषण (पहनावे)

पगड़ी- इसको पाग, पेचा, फालियो, साफा, घुमालो, फेटो, सेलो, अमलो, लपेटो, बागा, शिरोत्राण, फेंटा आदि नामो से भी जाना जाता है। यह सिर पर प्लेट जाना वाला लगभग ऽ.ऽ मीटर लम्बी एवं ५० सेमी. चौड़ी होती है। उदयपुर की पगड़ी प्रसिद्ध है तथा जोधपुर का साफा प्रसिद्ध है। युद्ध भूमि में केसरिया पगड़ी, दशहरे पर काले रंग की मंदील पगड़ी, होली पर फूल-पत्तियों वाली पगड़ी, विवाह पर पंचरंगी पगड़ी, श्रावण में लहरिया पगड़ी पहनी जाती है। रक्षाबंधन के अवसर पर बहिन भाई. को मोठड़ा साफा देती है। मीणा एवं गुर्जर जाति की पगड़ी को फेटा कहते है।

धोती- पुरुष द्वारा कमर से घुटने तक पहना जाने वाला वस्त्र है। आदिवासियों/भीलों द्वारा पहनी जाने वाली धोती ढ़ेपाड़ा/डेपाड़ा कहलाती है। सहरिया जनजाति के लोग धोती को पंछा कहते है।

अंगरखी/बुगतरी - पूरी बाँहों का बिना कॉलर एवं बटन वाला कुर्ता जिसमे बांधने के लिए कसें होती है। यह प्रायः सफेद रंग का होता है।

पोतिया - भील पुरुषों द्वारा पगड़ी के स्थान पर बांधा जाने वाला वस्त्र पोतिया कहलाता है।

शेरवानी- शादियों में पुरुषों द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र जो घुटने से लम्बा एवं कोटनुमा होता है।

पायजामा - अंगरखी, चुगा और जामे के नीचे कमर व पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र पायजामा कहलाता है।

टोपी- यह पगड़ी की जगह सिर को ढकने का वस्त्र होता है।

कमीज- ग्रामीण क्षेत्र में पुरुषों द्वारा धोती (कमर) के ऊपर पहने जाने वाला वस्त्र।

चुगा - इसे चोगा भी कहते है। यह अंगरखी के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता है।

आतमसुख *- तेज सर्दी से बचने के लिए शरीर पर ऊपर से नीचे तक पहने जाने वाला वस्त्र।*

बिरजस (ब्रिजेस) *- यह पायजामे के स्थान पर पहना जाने वाला चूड़ीदार वस्त्र होता है।*

कमरबंध*- इसे पटका भी कहते है। यह जामा के ऊपर कमर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र होता है, जिसे तलवार या कतार घुसी होती है।*

पछेवड़ा *- तेज सर्दी में ठण्ड से बचाव के लिए पुरुषों द्वारा कम्बल की तरह ओढ़े जाने वाला मोटा सूती वस्त्र पछेवड़ा कहलाता है।*

अंगोछा *- धूप से बचने के लिए पुरुषों द्वारा सिर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र अंगोछा कहलाता है।*

राजस्थान में महिलाओं (स्त्रियों) के वस्त्र/वेशभूषा

कुर्ती और कांचली *- यह शरीर के ऊपरी हिस्से (कमर के ऊपर) पहनी जाती है। कांचली के ऊपर कुर्ती पहनी जाती है, जिसमे कांचली के बांहें होती है जबकि कुर्ती के बांहें नहीं होती है।*

घाघरा *- इसे लहंगा, पेटीकोट, घाबला आदि नामो से भी जाना जाता है। यह कमर से नीचे एड़ी तक पहना जाने.....*

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

- ***राजस्थान में आभूषण***

राजस्थान में स्त्रियों के प्रमुख आभूषण

सिर के आभूषण-

शीषफूल (सिरफूल या सिरेज), सिरमांग, रखड़ी, बोर (बोरला), गोफण, पतरी, टिकड़ा, मेंमद, फूलगुघर, मैंण।

ललाट (मस्तक) के आभूषण –

बिन्दी, टीका, टीडीभलको, तिलक, सांकली, दामिनी, ताबित।

नाक के आभूषण –

चूनी, चोंप, नथ, लटकन, लूंग, कांटा, फीणी, बाली, बुलाक, बेसरि, बजट्टी, भंवरिया, वारी, खीवण,।

कान –

जमेला, झुमका, झेला, बाली, टोटी/बजूली, कर्णफूल, सुरलिया, पीपलपत्रा, पाटीसूलिया, अंगोटिया, ऐरंगपता, कोकरू, खींटली, गुड़दौं, छैलकड़ी, झूंटणौं, बाळा, माकड़ी, मच्छी ।

दांत –

चूंप, रखन।

गला –

कंठी, कंठसरी, कंठळ, खुंगाली (हंसली), गलपटिया, आड, चन्द्रहार, चम्पाकली, ठुसी, तुलसी, तिमणिया, मूंठ, मादलिया, मोहनमाल, मंगलसूत्र, निम्बोरी, बजण्डी, हार, हालरो, झालरो, खिंवली, गळपटियौं, छैंड़ियो, तगतगई., तांतणियौं, तैंड़ियो, थाळौं, बठळ।

बाजू –

अणत, कड़ा, कातरिया, पट, तकमा, ठडा, नवरत्न, बाजूबन्द, भुजबन्द, हारपन, अड़कणी, खांच, बहरखौं।

कलाई. –

कंगन, कंकण, कांकणी कंगन, गोखरू, चूड़ियां, हतपान (हथफूल), नोगरी .....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE

अध्याय – 13

राजस्थान में जनजातियाँ

सहरिया :

- राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति (भारत सरकार द्वारा घोषित)।
- बारां जिलें के किशनगंज एव शाहबाद जिलों में सर्वाधिक संख्या।
- **सहरियों का मुखिया** : कोतवाला
- बडें गांव को 'सहराना' कहा जाता हैं।
- छोटो बस्ती को 'सहरोल' कहा जाता हैं।
- गाँव के बीच में स्थित सामुदायिक केन्द्र दालिया/हथाई कहलाता हैं।
- सहरियों की पंचायती व्यवस्था त्रि-स्तरीय होती हैं /
- **पंचताई** : पाँच गाँवों की पंचायती।
- **एकदसिया** : ।। गाँवों की पंचायती।
- **चौरासिया** : ४५ गाँवों की पंचायती।
- चौरासी गाँवों की सभा सीताबाडो के वाल्मिकि मंदिर में होती हैं।
- सहरिया 'वाल्मिकि' को अपना आदि पुरुष मानते हैं।
- सहरियों की कुलदेवी कोडिया माता।
- तेजाजी एवं भैरव की भी पूजा करते हैं ।
- दीपावली पर 'हीड़' गाते हैं।
- होली के अवसर पर लट्ठमार होली खेलते हैं। राई नृत्य किया जाता हैं।
- मकर संक्रान्ति के अवसर पर लकड़ी के डण्डो से लेंगी खेला जाता हैं।
- वर्षा ऋतु में आला एवं लहंगी गीत गाया जाता हैं।
- **कपिलधारा का मेला** : कार्तिक पूर्णिमा
- **सीताबाड़ी का मेला** : ज्येष्ठ पूर्णिमा। इसे 'सहरियों का कुम्भ' भी कहते हैं।
- सहरिया महिलाएँ गोदना गुदवाती हैं परंतु पुरुषों का मनाही हैं।

- ***धारी संस्कार*** : मृतक के तीसरे दिन उसकी अस्थियों एवं राख को एक बर्तन से ढककर छोड़ दिया जाता है, अगले दिन उस जगह वैसी ही आकृति बनी होती है, यह समझा जाता है कि व्यक्ति का अगला जन्म उसी आकृति के अनुसार होगा।
- सहरिया पेड़ों पर घर बनाकर रहते हैं। उसे 'गोपना' कहते हैं ।
- अनाज एवं घरेलू सामान रखने की छोटी कोठी : कुसिली।
- अनाज व घरेलू सामान रखने की बड़ी कोठी : भडली।

अर्थव्यवस्था : सहरिया लोगों को जहाँ संमतल भूमि मिल जाती है पर कृषि एवं पशुपालन करते हैं। कृषि कार्यों में ५5 प्रतिशत, कृषक मजदूरी 35 प्रतिशत कार्यों में संलग्न व शेष वनों से लकड़ी व वन उपज एकत्रित करना, खनन कार्य करना। इस जाति में शिक्षा का अत्यंत अभाव है। अब शिक्षा का विकास हो रहा है। सहरिया क्षेत्र में मामूनी की. संकल्प संस्था , अच्छा कार्य कर रही है ।

कंजर :-

- मुख्यतया हाड़ौती क्षेत्र में।
- मुख्य व्यवसाय : चोरी करना।
- चोरी करने से पूर्व देवता से आशीर्वाद मांगते है, जिसे ये 'पातो मांगना' कहते है।
- जोगणिया माता (चितौड़गढ़) : कंजरों की कुलदेवी।
- चौथ माता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर)
- रक्त दंती माता : बूंदी।
- हनुमान जी : आराध्य देव।

हाकम राजा का प्याला पीने के.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

राजस्थान इतिहास के स्त्रोतः-

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

अशोक के अभिलेख : -

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले हैं।
- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख सेअशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख : -

- यह राजस्थान का सबसे प्राचीनतम अभिलेख है। 443 ई.पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के मिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ। वर्तमान में यह अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.): -

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ सिरोही से प्राप्त हुआ है।
  इससे अर्बुदांचल के राजा रजिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
  इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
  इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।

मानमोरी का अभिलेख : -

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके रचयिता पुष्य तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांगद के बारे में जानकारी मिलती है।

  राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड ने इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया था।

इस अभिलेख में अमृत मंथन का उल्लेख मिलता है।

इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों (महेश्वर, भीम, भोज एवं मान) के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डोर अभिलेख : -

जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासकों की वंशावली तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.): -

प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख : -

यह बड़वा (कोटा) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मोखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मोखरी शासकों बल,सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।

कणसवा का अभिलेख : -

738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।

आदिवराह मन्दिर का अभिलेख :

९५५ ई.का यह अभिलेख उदयपुर के आदिवराह मन्दिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मीलिपि में उत्कीर्ण है।

यह अभिलेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।

इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक चाचिंगदेव के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) : -

यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।

इस अभिलेख में बापा से महाराणा समरसिंह तक की वंशावली का उल्लेख है।

इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेखहै।

किराडू का लेख : -

1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मन्दिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत

.....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

- ***साहित्यिक स्रोत***

राजस्थानी इतिहास की जानकारी के लिए संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी एवं फारसी आदि की कृतियाँ अत्यंत उपयोगी हैं। इन कृतियों से तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों, सामाजिक एवं धार्मिक जीवन, युद्ध प्रणाली आदि पर काफी प्रकाश पड़ता है। साहित्यिक स्रोतों को भाषा के आधार पर चार भागों में विभाजित किया गया है ।

1. संस्कृत साहित्य 2. राजस्थानी साहित्य

3. जैन साहित्य 5.फारसी साहित्य

1. संस्कृत साहित्य *:- ऐतिहासिक साहित्यिक स्रोतों में संस्कृत साहित्य का काफी महत्व है। मध्यकालीन राजस्थान में विभिन्न शासकों के दरबारों में संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओं में साहित्यों की रचना की गई जो वर्तमान में अनूप संस्कृत पुस्तकालय (बीकानेर), पुस्तक प्रकाश (जोधपुर), प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर) आदि में सुरक्षित है।*

प्रारंभिक कालीन संस्कृत साहित्य :

1. **पृथ्वीराज विजय :-** पृथ्वीराज चौहान तृतीय के आश्रित कवि पण्डित जयानक द्वारा 12वीं सदी के उत्तरार्द्ध में रचित रचना। इस ग्रंथ से सपादलक्ष के चौहान शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।

2. **हम्मीर महाकाव्य :-** नयनचंद्र सूरी द्वारा रचित काव्य। इससे रणथम्भौर के चौहान वंश के इतिहास, अलाउद्दीन आक्रमण एवं हम्मीर की वीरता का बखान होता है। इस महाकाव्य में चौहान राजपूतों की उत्पत्ति सूर्यवंश से बताई जाती है।

3. **राज विनोद :-** बीकानेर शासक महाराजा कल्याणमल के दरबारी कवि सदाशिव भट्ट द्वारा 16वीं सदी में रचित ग्रंथा इस ग्रंथ से बीकानेर वासियों के रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान एवं आर्थिक स्थिति की पर्याप्त जानकारी मिलती है।

4. **अमरसार :-**16वीं सदी में पंडित जीवाधर द्वारा रचित इस ग्रंथ से महाराणा प्रताप एवं अमरसिंह प्रथम के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त होती है। यह ग्रंथ तत्कालीन समय में प्रचलित दास प्रथा, सैनिकों की वेशभूषा, मल्लयुद्ध एवं जानवरों की लड़ाईयों तथा तत्कालीन सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

5. **भट्टि काव्य :-**15वीं सदी में भट्टि द्वारा रचित यह ग्रंथ हमें उस समय की जैसलमेर राज्य की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्रदान करता है। इसमें जैसलमेर के शासक भीम की मथुरा एवं वृंदावन की यात्रा का वर्णन मिलता है।

6. **एकलिंग महात्म्य :-** इस ग्रंथ का प्रथम भाग (राजवर्णन) महाराणा कुंभा द्वारा लिखा गया। इस ग्रंथ को पूरा कान्ह व्यास ने किया। यह ग्रंथ गहलोत (गुहिल) वंश की वंशावली, वर्णाश्रम और वर्ण व्यवस्था पर अच्छा प्रकाश डालता है। इस ग्रंथ की तुलना पुराणों से की गई है।

7. ***अमरकाव्य वंशावली*** :- राजप्रशस्ति के लेखक रणछोड़ भट्ट द्वारा रचित इस ग्रंथ से बप्पा से लेकर राणा राजसिंह तक के मेवाड़ इतिहास,जौहर एवं दीपावली, होली आदि त्योहारों की जानकारी मिलती हैं।

8. ***अजितोदय*** :- जोधपुर शासक अजीतसिंह के दरबारी कवि जगजीवन भट्ट द्वारा 17वीं सदी में रचित इस ग्रंथ में महाराजा जसवंत सिंह और अजीतसिंह के समय में युद्धों, संधियों, विजयों एवं तत्कालीन समय में प्रचलित रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं की जानकारी मिलती है।

राजरत्नाकर :-17वीं सदी में महाराणा राजसिंह के समय सदाशिव भट्ट द्वारा .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अध्याय – 2

राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं

अब हम राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं पढ़ते हैं।

I. कालीबंगा की सभ्यता –

इस सभ्यता की खोज : –

इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री लुईसपीतैसीतौरी थे। इन्होंने इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप सेध्या न नहीं था इसलिए इसकी खोजन हीं हो पाई। इस सभ्यता के खोजकर्ता अमलानंद घोष हैं। उन्होनें 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।

इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1.बृजवासीलाल

2.बीके (बालकृष्ण) थापर इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

लुईस पी तैसीतौरी के बारे में –

ये इटली के पुदीने कस्बे के निवासी थे इनका जन्म सन् 1887 में हुआ । और यह 1900 ईस्वी में भारत आए । यह बीकानेर राज्य में सबसे पहले आए । उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जीने इन्हें अपने राज्य का सभी प्रकार का चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया हैं । ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होनें राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताएँ थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

इस सभ्यता का कालक्रम कार्बन डेटिंग पद्धति के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।

कालीबंगा शब्द "सिंधी भाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - "काले रंग की चूड़ियां"। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों की बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।

कालीबंगा की सभ्यता है भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो स्वतंत्रता के बाद खोजी गई थी। यह एक कांस्य युगीन सभ्यता है।

हनुमानगढ़ जिलें से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा 1985 - 86 में कालीबंगा संग्रहालय की स्थापना की गई थी । यह संग्रहालय हनुमानगढ़ जिलें में स्थित है।

<u>यह सभ्यता की विशेषताएं -</u>

इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं इसलिए यहां पर मकान बनाने की पद्धति को "ऑक्सफोर्ड पद्धति" कहते हैं। इसी पद्धति को जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति के नाम से भी जानते हैं।

मकान कच्ची एवं पक्की ईट के बने हुए थे, आरम्भ यह कच्ची ईटे थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते है इन ईटों का आकार 30 x 15 x 7.5 है।

इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे

यहां पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईटों से होता था (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियां मिली है वह कालीबंगा स्थल है)

विश्व की प्राचीनतम जुते हुए खेत के प्रमाण इसी सभ्यता से मिलते हैं।

यहां पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।

यहां के लोग एक साथ में दो फसलें करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं जौ और गेहूं।

यहां पर उत्खनन के दौरान यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं प्राप्त हुए हैं यहां के लोग बलिप्रथा में भी विश्वास रखते थे।

इस सभ्यता का पालतू जानवर कुत्ता था । यह सभ्यता के लोग ऊंट से भी परिचित थे। इसके अलावा गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से भी परिचित थे।

विश्व में प्राचीनतम नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं, इसलिए इसे नगरीय सभ्यता भी कहते हैं यहां पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

यहां पर समाधि प्रथा का प्रचलन था। यह समाधि तीन प्रकार की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था

- अंडाकार गड्ढे खोद कर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे
- अंडाकार गड्ढे खोदकर व्यक्ति को तोड़मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना
- एक खड्डा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना ।

स्वास्तिक चिन्ह का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्ति क चिन्ह का प्रयोग यहां के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए किया करते थे।

कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की समानता के प्रमाण बेलनाकार बर्तन मिलते हैं।

यहां पर एक कपाल मिलता है जिसमें छः प्रकार के छेद थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहां के लोग शल्य चिकित्सा से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिलते हैं।

यहां पर एक सिक्का प्राप्त होता है जिस के एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर चीता का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि .....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 4

मेवाड़ का इतिहास

मेवाड़ के पुरातात्विक स्त्रोत

नगरी का लेख (200 बी-सी-150 बी-सी)

यह चित्तौड़गढ़ जिलें के प्राचीनतम नगर माध्यमिक या नगरी से प्राप्त शिलालेख है, जो जैन या बोद्धों से संबंधित है। यह बहुत छोटा शिलालेख है।

नाथ-प्रशस्ति-एकलिंग जी (971 ई.)

यह उदयपुर के पास स्थित कैलाशपुरी एकलिंग जी के लकुलीश मंदिर में नरवाहनं के समय का संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि का अभिलेख है।

जैन कीर्ति स्तम्भ लेख (13 वीं सदी)

चित्तौड़ दुर्ग में स्थित रणकपुर के चौमुखा मंदिर (आदिनाथ मंदिर) में सस्कृत भाषा व नागरी लिपि में उत्कीर्ण। इसमें कुम्भा के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

विजय, स्तम्भ प्रशस्ति (1460 ई.)

चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तम्भ पर उत्कीर्ण। इसका प्रशस्तिकार कवि अत्रि व उसका पुत्रा महेश भट्ट था। इसमे बाण, हम्मीर मोकल का उल्लेख मिलता है। गणेश, शिव स्तुति मिलती है।

इसमें कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थों, विरुदों ;दानगुरु, राजगुरु,शैलगुरुद्ध का उल्लेख तथा मालवा व गुजरात की सम्मिलित सेना को हराने का उल्लेख मिलता है।

कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.) :-

यह लेख राजसमंद जिलें के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भस्यांम मंदिर (मामादेव का मदिर -वर्तमान नाम) में संस्कृत भाषा एवं नागरी लिपि में पांच शिलाओं पर उत्कीर्ण है। । इसमें भौगोलिक स्थिति का, जनजीवन का, एकलिंग मंदिर का वर्णन, चित्तौड़ का वर्णन- (चित्रांग ताल, दुर्ग, वैष्णव तीर्थ के रूप में) किया गया है।

इसमें मुख्यतया कुम्भा के विजयों का विस्तार से वर्णन मिलता है।

इसका रचयिता कान्ह व्यास है। जबकि डॉ। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार इसका रचयिता महेश भट्ट है।

<u>जगन्नाथराय प्रशस्ति (1676) :-</u>

यह जगदीश मंदिर, उदयपुर में उत्कीर्ण है।

इसमें बाप्पा से सांगा तक की उपलब्धियं का वर्णन है।

यह मंदिर जगतसिंह प्रथम द्वारा बनाया गया।

यह पंचायतन शैली का लेख है। जिसे अर्जुन की निगरानी में तथा सूत्राकार भाणा व उसके पुत्रा मुकन्द की अध्यक्षता में बनवाया गया।

<u>राजप्रशस्ति (1676) :-</u>

यह प्रशस्ति राजसंमद झील के तट पर नौ चौकी स्थान के ताकों में 27 काली पाषाण शिलाओं पर पद्य संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है।

इसका रचयिता तेलंग ब्राह्मण रणछोड़ भट्ट था।

इस प्रशस्ति के उत्कीर्ण कर्ता गजधर मुकुन्दर, अर्जुन, सुखदेव, केशव, सुन्दरलालों, लखों आदि थें।

मेवाड़ के शासकों की उपलब्धियो का वर्णन मिलता है।

यह प्रशस्ति जगतसिंह प्रथम तथा राजसिंह के काल की उपलब्धियँ जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

- मेवाड़ का गुहिल वंश - मेवाड़ रियासत राजस्थान की सबसे प्राचीन रियासत है, इसे मेदपाट, प्राग्वाट, शिवि जनपद आदि उपनामों से जाना जाता है।
- मेवाड़ का गुहिल वंशी राजघराना एकलिंगजी (शिव) का उपासक था, इसी कारण मेवाड़ के शासक एकलिंगनाथजी को स्वयं के राजा/ईष्ट देव तथा स्वयं को एकलिंगनाथजी का दीवान मानते हैं।
- गुहिल वंश की कुल देवी बाण माता है। मेवाड़ रियासत के सामंत 'उमराव कहलाते थे। मेवाड़ के महाराणा राजधानी छोड़ने से पहले एकलिंगजी से आज्ञा लेते थे, उसे 'आसकाँ कहते थे।

- मेवाड़ के महाराणा 'हिन्दुआ का सूरज कहलाते हैं क्योंकि वो स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं। गुहिल वंश के राजध्वज पर 'उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित है तथा इसमें उदयपुर का राजवाक्य "जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहीं राखै करतार है" अंकित है।
- ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ रहने के सकते देते है। मेवाड़ में 1877 में महाराणा के कोर्ट का नाम बदलकर 'इजलास खास कर दिया गया था।
- हूणों के पराभव के बाद राजस्थान में जिन क्षत्रिय (राजपूत) वंशों ने अपने राज्य स्थापित किये उनमें गुहिल वंशीय राजपूत प्रमुख हैं।
- गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने इन्हें विशुद्ध सूर्यवंशीय क्षत्रिय माना है। मेवाड़ राजवंश की स्थापना ईसा की पाँचवी शताब्दी में गुहिल नाम के एक प्रतापी राजा ने की थी।
- भारत की आजादी के समय यह विश्व का सबसे पुराना राजवंश था लगभग 1400 वर्ष की अवधि में 75 शासकों की श्रृंखला ने निर्विघ्न रूप से मेवाड़ पर शासन किया। इस वंश ने शौर्य और पराक्रम की दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है।

मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासको का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :-

गुहिल वंश के शासक

गुहिल

राजा गुहिल का जीवन परिचय :-

विजयभूप ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहां इनका शासन सदियों तक रहा । विजयभूप की 6वी पीढ़ी में शिलादित्य नामक व्यक्ति वल्लभीनगर का शासक बना । राजस्थान के आबू में उस समय परमार वंश का शासन था जिनकी राजधानी चंद्रावती थी । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास अबुर्दा देवी मंदिर चली जाती है । पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ोसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । शिलादित्य के एक सेवक ने आबू

पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी । पुष्पावती ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होनें अन्यत्र जाने का फैसला किया । रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित वीरनगर नामक स्थान पर पहुंची। यहां वह कमलाबाई नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं । कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गईं। ऐसा माना जाता हैं कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम गुहिल रख दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।

बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक परवर्ती का था । भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे । वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया । बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला। गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहंचा लेकिन वहां उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था । अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईडर के आस-पास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय किया। उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था । गुहिल ने भीलों से प्रार्थना की कि वो मेवाड़ को जीतने में उसकी मदद करें । गुहिल ने उनसे वादा किया कि इस सहयोग के बदले में वह और उसके वंशज कभी भी भीलों से .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण के प्रमुख कारण निम्न थे।

- चित्तौड़ का प्रभाव या शक्ति निरंतर बढ़ रही थी।
- अल्लाउद्दीन खिलजी की साम्राज्यवादी नीतियां अर्थात् वह अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था।
- चित्तौड़ व्यापारिक दृष्टी से और युद्ध की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण था।
- अल्लाउद्दीन खिलजी के लिए चित्तौड़ को जीतना प्रतिष्ठा का सवाल था।
- अल्लाउद्दीन खिलजी, रानी पद्मिनी की सुन्दरता से काफी प्रभावित था।

रानी पद्मिनी या पद्मावती

वह सिंहल द्वीप (श्रीलंका) की राजकुमारी थी। उनके पिता का नाम "गन्धर्व सेन" था और उनकी माता का नाम "चम्पावती" था। राघव चेतन ने अल्लाउद्दीन खिलजी को पद्मिनी की सन्दरता के बारे में बताया था। 1303 में जब अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया तो चित्तौड़ में पहला साका हुआ , साका में स्त्रियाँ जौहर करती हैं और पुरुष केसरियां करते हैं। इस साका में रानी पद्मिनी ने 1600 अन्य महिलाओ के साथ जौहर किया और दूसरी तरफ रतन सिंह के नेतृत्व में केसरिया किया गया। रतन

सिंह के सेनापति "गौरा" और बादल थे। अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया और अधिकार करने के बाद अल्लाउद्दीन खिलजी ने गुस्से में 30000 लोगो का नरसंहार करवा दिया। अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ अपने बेटे "खिज्र खां" को सौंप दिया और चित्तौड़ का नाम बदलकर अपने बेटे के नाम पर नाम "खिज्राबाद " कर दिया। खिज्र खां ने 'गंभीरी नदी पर एक पल का निर्माण करवाया।

खिज्र खां ने चित्तौड़ में एक मकबरे का भी निर्माण करवाया और इस मकबरे पर एक फ़ारसी भाषा में अभिलेख लिखवाया इस अभिलेख में अल्लाउद्दीन खिलजी को "संसार का रक्षक" और "इश्वर की छाया " बताया गया है। बाद में चित्तौड़ का किला "मालदेव सोनगरा" को सौंप दिया गया, मालदेव सोनगरा को "मुंछाला मालदेव" के नाम से भी जाना जाता है। अमीर खुसरो ने एक किताब लिखी "खजाइन उल फुतूह" या जिसका दूसरा नाम "तारीख ए अलाई" है , इस पुस्तक में वर्णन है कि अल्लाउद्दीन खिलजी ने राजस्थान में कब और कहा आक्रमण किये अर्थात् अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा राजस्थान के आक्रमणों की जानकारी इस पुस्तक में उपलब्ध है। हेमरत्न सूरी ने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम "गौरा बादल री चौपाई" है , इसमें रतन सिंह के सेनापति गोरा और बादल की बहादुरी के बारे में वर्णन है। मलिक मुहम्मद जायसी ने 1540 ई. में "पद्मावत" नामक पुस्तक लिखी, यह अवधि भाषा में लिखी गयी है इसमें रानी पद्मावती (पद्मावत) की सुन्दरता के बारे में वर्णन है। "मुहनौत मैंणसी" और जेम्स टॉड ने पद्मावत कहानी को स्वीकार कर दिया था लेकिन "सूर्यमनल मिसण" ने इस कहानी को अस्वीकार कर दिया।

हम्मीर सिंह (1326-64) : -

गुहिल वंश की मुख्य शाखा (रावल शाखा) के पतन के पश्चात् सोनगरा चौहानों को पराजित कर हम्मीर सिंह ने 1326 ई. में मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश की नींव रखी। इससे पहले 1303 ई. में रावल रतन सिंह को पराजित कर अलाउद्दीन खिलजी ने राजधानी चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) पर अधिकार कर लिया था। अल्लाउद्दीन खिलजी ने अपने पुत्र खिज्रखां को चित्तौड़गढ़ में नियुक्त किया तथा चित्तौड़गढ़ का नाम बदलकर 'खिज्राबाद' कर दिया। 1311 ई.में अल्लाउद्दीन खिलजी ने जालौर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। जालौर के शासक कान्हड़देव सोनगरा चौहान व उसके पुत्र वीरमदेव युद्ध में वीरगति को

प्राप्त हए । लेकिन कान्हड़देव के भाई मालदेव सोनगरा चौहान ने अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता स्वीकार कर ली थी जिस कारण उसे जीवित छोड़ दिया गया। अल्लाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के पश्चात् मालदेव को चित्तौड़ का प्रशासक नियुक्त कर खिज्रखां दिल्ली लौट आया । धीरे-धीरे मेवाड़ में मालदेव ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली।

सिसोदिया वंश के राणा हम्मीर सिंह अरिसिंह के पुत्र तथा लक्ष्मण सिंह के पौते.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अध्याय-5

मारवाड़ का इतिहास

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तरी पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है। उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है। मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था। प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये। फिर राठौड़ वंश कि स्थापना इस भाग में हुई तथा मारवाड़ कि संकटकालीन राजधानी ' शिवाना दुर्ग ' को कहा जाता था।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
3- किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

उत्पत्ति

राठौड़ शब्द की व्युत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है।

पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं।

राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है।

डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है। इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया हैं।

डा. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना हैं।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

मारवाड़ के राठौड़ वंश के संस्थापक, तथा मारवाड़ के राठौड़ों का संस्थापक या आदि पुरुष भी कहा जाता है ।

राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वति थी ।

13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बरबाद कर दिया तो राव सीहा मारवाड़ चला आया ।

राव सीहा ने सर्वप्रथम पाली (वर्तमान) के निकट अपना साम्राज्य स्थापित किया ऐसा कहते हैं कि उन्होनें पाली के पालीवाल ब्राह्माणों को मेर व मीणाओं के अत्याचार से मुक्ति दिलाई उनकी रक्षा की तथा उसके पश्चात् उनके आग्रह पर वहीं आकर बस गया ।

पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती है ।इस लेख के अनुसार सीहा सेतकुँवर का पुत्र था । उसकी पत्नी पार्वती ने उसकी मृत्यु पर इस देवल का निर्माण करवाया था ।इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गांव (पाली) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्ध के दौरान हुई थी । इस लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया है । इस लेख से प्रमाणित होता है कि इस समय राठौड़ों का राज्य विस्तार पाली के आस - पास ही सीमित था ।

राव सीहा के पश्चात् उनका पुत्र आस्थान गद्दी पर बैठा ।

आस्थान (1273 – 1291)

सीहा के बाद आस्थान राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोज को केन्द्र बनाया । 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आस्थान वीरगति को प्राप्त हुआ

आस्थान के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।

राठौड़ राजवंश की कुलदेवी चक्रेश्वरी, राठेश्वरी, नागणेची या नागणेचिया के नाम से प्र सिद्ध है ।

इनके छोटे भाई का नाम धांधल था। ये लोकदेवता पाबू जी के पिता थे ।

राव चूड़ा (1383 – 1423)

राव चूडा विरमदेव का पुत्र था ।

राव चूड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता हैं । अपने पिता की मृत्यु के समय चूड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दिया था ।

उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डोर जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।

चूड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।

इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।

उसने जलाल खां खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।

परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगलप्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूड़ा मारा गया ।

राव चूड़ा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया ।

उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँदबावड़ी का निर्माण करवाया था ।

रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद लोकदेवता इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी ।

मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।

कान्हा (1423-1427)

चूड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।

1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।

ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा कि मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

राव रणमल,-(1427-1438)

राव रणमल, राव चूडा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कवर से हुआ था ।

परंतु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा)की शरण में चला गया ।

राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की ।

रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परंतु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।

रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।

रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का साथ मेवाड़ के मोकल (भॉजा) ने दिया । इस युद्ध में कान्हा मारा गया ।

मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ ।

राव जोधा (1438 - 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था ।

2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली ।

3. चूड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राठौड़ों की राजधानी मण्डौर पर अधिकार कर लिया। 15 वर्ष बाद राव जोधा मण्डौर पर पुनः अधिकार कर पाया ।

4. राव जोधा ने सन् 1453 में मण्डौर राज्य को अपने अधीन किया ।

5. राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जोधपुर नगर बसाया ।

6. राव जोधा ने 1459 ई. में चिड़ियाटुक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया ।

7. दुर्ग के निर्माण के पश्चात् राव जोधा ने अपनी राजधानी मण्डौर से .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)

राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	

FREE SAMPLE

RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE

- **'कच्छवाहा' वंश**

कच्छवाहा' अपने आपको भगवान श्री राम के पुत्र कुश' की संतान मानते हैं।
संस्थापक दुलहराय (तेजकरण), मूलतः ग्वालियर निवासी था। 1137 ई. में उसने बड़गुजरों को हराकर नवीन ढूँढाड़ राज्य की स्थापना की।
दुलहराय के वंशज कोकिलदेव ने 1207 ई. में मीणाओं से आमेर जीतकर अपनी राजधानी बनाया, जो 1727 ई. तक कच्छवाहा वंश की राजधानी रहा।
इसी वंश के शेखा ने शेखावटी में अपना अलग राज्य बनाया।

कछवाहा वंश के प्रमुख शासक

पृथ्वीसिंह

यह आमेर का पहला शक्तिशाली शासक था। 1527 में खानवा के युद्ध में पृथ्वीराज राणा सांगा की तरफ से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है इस समय पृथ्वीराज की पत्नी बालाबाई अपने छोटे पुत्र पूरणमल का राज्याभिषेक करवाती है जिसके कारण पृथ्वीराज का बड़ा पुत्र भीमदेव नाराज हो जाता है।
भीमदेव 1533 में पूरणमल को परास्त करके स्वयं शासक बनता है, 1536 में भीमदेव की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र रतनसिंह शासक बनता है, रतन सिंह से उसका चाचा सांगा शत्रुता रखने लग जाता है, सांगा ने बीकानेर के राव जैतसी के साथ मिलकर रतन सिंह से उसका मोजमाबाद वाला क्षेत्र छीनकर सांगानेर बसाता है, सांगा की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई भारमल रतनसिंह से शत्रुता रखने लग जाता है. भारमल ने रतन सिंह के छोटे भाई आसकरण को अपने पक्ष में मिलाते हुए आसकरण के माध्यम से रतन सिंह की हत्या करवा देता है और आसकरण को कुछ समय के लिए शासक बनाता है भारमल जून 1547 में आसकरण को हटाते हुए स्वयं शासक बन जाता है।
रानी बालाबाई ने गलता में कृष्णदास पयहारी संप्रदाय को संरक्षण दिया था।

भारमल (1547-1574 ई.)

भारमल (1547-1574 ई.) या बिहारीमल 1547 ई. में भारमल आमेर का शासक बना।
भारमल प्रथम राजस्थानी शासक था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की व 1562 ई. में अपनी पुत्री हरखाबाई उर्फ मानमति या शाही बाई (मरियम उज्जमानी) का विवाह अकबर से किया।
मुगल बादशाह जहाँगीर हरखाबाई का ही पुत्र था।

अकबर और राजस्थान यात्रा :

अकबर ने अपने जीवन में पहली बार यात्रा के लिए 1562 में राजस्थान आता है यही उसकी राजस्थान की पहली यात्रा थी इस यात्रा का उद्देश्य अजमेर स्थित ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत करना था।
इस यात्रा के दौरान आमेर का शासक भारमल सांभर के निकट अकबर से सामेला प्रक्रिया से मुलाकात करते हुए अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तथा अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रखता है।

जोधा अकबर विवाहः

अजमेर से लौटता हुआ अकबर 10 जनवरी 1562 को भारमल की पुत्री जोधाबाई / हरकाबाई के साथ विवाह करता है ।
जोधा अकबर विवाह पहला राजपूत मुगल विवाह सम्बन्ध था ।
भारमल पहला राजपूत था जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी ।
अकबर ने भारमल को अमीर-उल-उमरा की उपाधि प्रदान की थी तथा उसके पुत्र भगवंतदास व पौत्र मानसिंह को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त किया ।

भगवन्त दास (1574-1589 ई.)

भगवन्त दास या भगवान दास भारमल का पुत्र था।
उसने अपनी पुत्री मानबाई (मनभावनी) का विवाह शहजादे सलीम (जहाँगीर) से किया।

मानबाई को सुल्तान निस्सा' की उपाधि प्राप्त थी। खुसरो इसी का पुत्र था।

1562 में जब भारमल (Raja Bharmal) अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तो अकबर भगवंतदास को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त करता है।

भगवानदास मुगलों के दरबार में नियुक्त होने वाला पहला राजपूत दरबारी था।

अकबर ने भगवंत दास को 1582 में लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया था। इसी लाहौर सूबेदारी के तहत् 1589 में भगवंत दास ने अपनी पुत्री मानबाई का विवाह अकबर के पुत्र सलीम के साथ करवाया था।

मानबाई को मुगल दरबार में सुल्ताना मस्ताना' के नाम से जाना जाता था। खुसरो इसी का पुत्र था, जहाँ गीर के अत्यधिक शराबी होने के कारण मानबाई ने 1608 में आत्महत्या कर ली थी।

मानबाई का शाही मकबरा इलाहाबाद में स्थित है।

मानसिंह (1589-1614 ई.)

मानसिंह भगवन्त दास का पुत्र था।

मानसिंह आमेर के कच्छवाहा शासकों में सर्वाधिक प्रतापी एवं महान् राजा था।

मानसिंह ने 52 वर्ष तक मुगलों की सेवा की ।

मानसिंह 1573 में अकबर के दूत के रूप में राणा प्रताप से मिला था ।

1576 ई. में हल्दीघाटी युद्ध में उसने शाही सेना का नेतृत्व किया था।

अकबर ने उसे फर्जन्द (पुत्र) एवं राजा की उपाधि प्रदान की।

वह अकबर के नवरत्नों में शामिल था।

मानसिंह ने बंगाल में अकबर नगर तथा बिहार में मानपुर नगर को बसाया ।

मानसिंह स्वयं कवि, विद्वान, साहित्य प्रेमी व विद्वानों का आश्रयदाता था।

शिलादेवी (आमेर), जगत शिरोमणी (आमेर) गोविन्द देवजी (वृंदावन) मंदिर उसी ने बनवाये थे।

बिहार सूबेदारीः-

अकबर मानसिंह को 1587 में बिहार का सूबेदार नियुक्त करता है। बिहार सूबेदारी के दौरान 1589 में भगवंतदास की मृत्यु होने पर मानसिंह का राज्याभिषेक होता है इस समय अकबर मानसिंह की मनसब 5000 निश्चित करता है। बिहार सूबेदारी के दौरान ही मानसिंह ने 1594 में उड़ीसा को जीतकर उसे मुगल भारत का अंग बनाया था।

बंगाल सूबेदारीः-

1594 में मानसिंह बंगाल का सूबेदार नियुक्त होता है। बंगाल सूबेदारी के दौरान बीमार होने पर मानसिंह अजमेर आकर बंगाल पर नियंत्रण हेतु अपने पुत्र जगत सिंह को बंगाल भेजता है।

मानसिंह ने आमेर में जल आपूर्ति हेतु मानसागर झील का निर्माण करवाया था तथा आमेर के महलों व आमेर के मुकुट बिहारी मंदिर का निर्माण .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	

RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अध्याय - 6

राजस्थान के अन्य वंश

परमार का शाब्दिक अर्थ शत्रु को मारने वाला होता है। प्रारम्भ में परमारों का शासन आबू के आस-पास के क्षेत्रों तक ही सीमित था। प्रतिहारों की शक्ति के ह्रास के उपरान्त परमारों की राजनीतिक शक्ति में वृद्धि हुई।

राजस्थान के परमार वंश

आबू के परमार :- आबू के परमार वंश का संस्थापक 'धूमराज' था, लेकिन इनकी वंशावली उत्पलराज से प्रारम्भ होती है। पड़ौसी होने के कारण आबू के परमारों का गुजरात के शासकों से सतत् संघर्ष चलता रहा। गुजरात के शासक मूलराज सोलंकी से पराजित होने के कारण आबू के शासक धरणीवराह को राष्ट्रकूट धवल का शरणागत होना पड़ा। लेकिन कुछ समय बाद धरणीवराह ने आबू पर पुनः अधिकार कर लिया। उसके बाद महिपाल का 1002 ई. में आबू पर अधिकार प्रमाणित होता है। इस समय तक परमारों ने गुजरात के सोलंकियों की अधीनता स्वीकार कर ली। महिपाल के पुत्र धंधुक ने सोलंकियों की अधीनता से मुक्त होने का प्रयास किया। फलतः आबू पर सोलंकी शासक भीमदेव ने आक्रमण किया। धंधुक आबू छोड़कर धार के शासक भोज के पास चला गया। भीमदेव ने विमलशाह को आबू का प्रशासक नियुक्त किया। विमलशाह ने भीमदेव व धंधुक के मध्य पुनः मेल करवा दिया। उसने 1031 ई. में आबू में 'आदिनाथ' के भव्य मंदिर का भी निर्माण करवाया। धंधुक की विधवा पुत्री ने बसन्तगढ़ में सूर्यमंदिर का निर्माण करवाया व सरस्वती बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया।

कृष्णदेव के शासनकाल :- - कृष्णदेव के शासनकाल में 1060 ई. में परमारों और सोलंकियों के सम्बन्ध पुनः बिगड़ गए, लेकिन नाड़ौल के चौहान शासक बालाप्रसाद ने इनमें पुनः मित्रता करवाई। कृष्णदेव के पौत्र विक्रमदेव ने महामण्डलेश्वर की उपाधि धारण

की। विक्रमदेव का प्रपौत्र धारावर्ष (1163-1219 ई.) आबू के परमारों का शक्तिशाली शासक था। इसने मोहम्मद गौरी के विरुद्ध युद्ध में गुजरात की सेना का सेनापतित्व किया। वह गुजरात के चार सोलंकी शासकों कुमारपाल, अजयपाल, मूलराज व भीमदेव द्वितीय का समकालीन था। उसने सोलंकियों की अधीनता का जुआ उतार फेंका। उसने नाडौल के चौहानों से भी अच्छे सम्बन्ध रखे। अचलेश्वर के मन्दाकिनी कुण्ड पर बनी हुई धारावर्ष की मूर्ति और आर-पार छिद्रित तीन भैंसे उसके पराक्रम की कहानी कहते हैं। 'कीर्ति कौमूदी' नामक ग्रंथ का रचयिता सोमेश्वर धारावर्ष का कवि था। उसके पुत्र सोमसिंह के शासनकाल में तेजपाल ने आबू के देलवाड़ा गाँव में 'लूणवसही' नामक नेमिनाथ का मंदिर अपने पुत्र लूणवसही व पत्नी अनुपमादेवी के श्रेयार्थ बनवाया। इसके पश्चात् प्रतापसिंह और विक्रम सिंह आबू के शासक बने। 1311 ई. के लगभग नाडौल के चौहान शासक राव लूम्बा ने परमारों की राजधानी चन्द्रावती पर अधिकार कर लिया और वहाँ चौहान प्रभुत्व की स्थापना कर दी।

मालवा के परमार :- - मालवा के परमारों का मूल उत्पत्ति स्थान भी आबू था। इनकी राजधानी उज्जैन या धारानगरी रही, मगर राजस्थान के कई भू-भाग-कोटा राज्य का दक्षिणी भाग, झालावाड़, वागड़, प्रतापगढ़ का पूर्वी भाग आदि इनके अधिकार में थे। मालवा के परमारों का शक्तिशाली शासक मुंज हुआ, वाक्पतिराज, अमोघ-वर्ष उत्पलराज, पृथ्वीवल्लभ, श्रीवल्लभ आदि उसके विरुद थे। मेवाड़ के शासक शक्तिकुमार के शासनकाल में उसने आहड़ को नष्ट किया और चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया। उसने चालुक्य शासक तैलप द्वितीय को छः बार परास्त किया, मगर सातवीं बार उससे पराजित हुआ और मारा गया। राजा मुंज को 'कवि वृष' भी कहा जाता था। 'नवसहसांक चरित' का रचयिता पद्मगुप्त और अभिधानमाला' का रचयिता हलायुध उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

मुंज के बाद सिन्धुराज और भोज प्रसिद्ध परमार शासक हुए। भोज अपनी विजयों और विद्यानुराग के लिए प्रसिद्ध था। भोज ने सरस्वती कण्ठाभरण, राजमृगांक, विद्वज्जनमण्डल, समरांगण, शृंगार मंजरी कथा, कूर्मशतक आदि ग्रंथ लिखे। चित्तौड़ में उसने 'त्रिभुवन

नारायण' का प्रसिद्ध शिव मंदिर बनवाया, जो मोकल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, (1429 ई. में राणा मोकल द्वारा जीर्णोद्धार के कारण)। कुम्भलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार नागदा में भोजसर का निर्माण भी परमार भोज द्वारा करवाया गया। उसने सरस्वती कण्ठाभरण नामक पाठशाला बनवाई। वल्लभ, मेस्तुंग, वरस्चि, सुबन्धु, अमर, राजशेखर, माघ, धनपाल, मानतुंग आदि विद्वान उसके दरबार में थे।

भोज का उत्तराधिकारी जयसिंह भी एक योग्य शासक था। वागड़ का राजा मण्डलीक उसका सामन्त था। 1135 ई. के लगभग मालवा पर चालुक्य शासक सिद्धराज ने अधिकार कर लिया और परमारों की शक्ति ह्रासोन्मुख हो गई। तेरहवीं शताब्दी में अर्जुन वर्मा के समय मालवा पर पुनः परमारों का आधिपत्य स्थापित हुआ। मगर यह अल्पकालीन रहा। खिलजियों के आक्रमण ने मालवा के वैभव को नष्ट कर दिया और परमार भाग कर अजमेर चले गए।

वागड़ के परमार :- - वागड़ के परमार मालवा के परमार कृष्णराज के दूसरे पुत्र डम्बरसिंह के वंशज थे। इनके अधिकार में डूंगरपुर-बाँसवाड़ा का राज्य था, जिसे वागड़ कहते थे। अर्थूणा इनकी राजधानी थी। धनिक, कंकदेव, सत्यराज, चामुण्डराज, विजयराज आदि इस वंश के शासक हुए। चामुण्डराज ने 1079 ई. में अर्थूणा में मण्डलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया। 1179 ई. में गुहिल शासक सामन्तसिंह ने परमारों से वागड़ छीन कर वहाँ गुहिल वंश का शासन स्थापित कर दिया। अर्थूणा के ध्वस्त खण्डहर आज भी परमार काल की कला और समृद्धि की कहानी बयां करते हैं।

जाट वंश

- राजस्थान के पूर्वी भाग भरतपुर, धौलपुर पर जाट वंश का शासन था।

भरतपुर के जाटवंश के .....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 9

1857 की क्रांति

राजस्थान में 1857 की क्रांति का आरम्भ

- 1857 Revolution के समय भारत का गवर्नर जनरल " लार्ड केनिंग " था।
- जब AGG जॉर्ज पेट्रिक लॉरेंस को मेरठ में सैनिक क्रान्ति की सूचना मिली तब वह माउन्ट आबू में था।
- AGG को मेरठ में क्रान्ति की सूचना 19 मई 1857 को मिली।
- जॉर्ज पेट्रिक लॉरेंस ने अजमेर के मैगजीन दुर्ग में तैनात 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री (NI) को नसीराबाद भेज दिया।
- मैगजीन दुर्ग में अंग्रेजो का शस्त्रागार तथा सरकारी खजाना रखा हुआ था।
- इस दुर्ग का नाम अकबर द्वारा रखा गया था।
- AGG ने देशी राजाओ को पत्र लिखकर 1817-1818 की सहायक सन्धियों का स्मरण कराया तथा क्रान्ति के दमन हेतु सहयोग माँगा।
- 1857 की क्रान्ति के समय राजपूताना उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्त के प्रशासनिक नियंत्रण में था।
- उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्त का मुख्यालय आगरा में था और इस प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलवीन था।

नसीराबाद में क्रान्ति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति का बिगुल नसीराबाद छावनी के सैनिको ने बजाया।
- यहाँ अजमेर से अचानक भेजी गई, 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सेनिको में असन्तोष व्याप्त हो गया था।
- 30 वीं नेटिव इन्फेंट्री यहाँ पहले से ही तैनात थी।
- नसीराबाद छावनी के सैनिक रोटियों के आटे में हड्डी का चूरा मिला होने की अफवाह से भी उत्तेजित हो गये थे।

- 28 मई. 1857 को 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिको ने विद्रोह कर अपने अधिकारी प्रिचार्ड का आदेश मानने से इन्कार कर दिया।
- विद्रोही सैनिको ने छावनी में मौजूद अंग्रेजो के. वेनी, स्पोर्टिस वुड तथा न्यूबरी की हत्या कर दी और दिल्ली कूच कर गए।

बख्तावर सिंह द्वारा यहाँ विद्रोहियों का .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अध्याय – II

राजस्थान में प्रजामंडल

क्र. सं.	प्रजामंडल नाम	स्थापना वर्ष	गठनकर्ता	अध्यक्षता	प्रमुख नेता/ उद्देश्य कार्य/सहयोगी
.	जयपुर प्रजामंडल	1931	जमनालाल बजाज	कपूर चन्द्र पाटनी	हीरालाल शास्त्री, जमनालाल बजाज
		1936			हीरालाल शास्त्री, बाब हरिश्चन्द्र, टीकाराम पालीवाल, लादूराम जोशी, हंस डी. राय. पूर्णानन्द जोशी
२.	बूँदी प्रजामण्डल	1931	कांतिलाल	कांतिलाल	नित्यानन्द सागर, गोपाललाल कोटिया,गोपाललाल जोशी, मोतीलाल अग्रवाल,पूनम चन्द्र
	बूँदी राज्य प्रजा परिषद्	1937	ऋषिदत्त मेहता	चिरंजीलाल मिश्र	बृज सुन्दर शर्मा
३.	हाड़ौती प्रजामण्डल	1934	पं. नयनूराम शर्मा	हरिमोहन माथुर	प्रभुलाल शर्मा, पं. अभिन्न हरि

1.	मारवाड़ (जौधपुर) प्रजामण्डल	1934	जयनारायण व्यास	मोहम्मद	आनन्दराज सुराणा, मथुरादास माथुर, रणछोड़दास गट्टानी, इन्द्रमल जैन, कन्हैयालाल मणिहार, चांदकरण शारदा, छगनलाल चौपसनीवाल, अभयमल मेहता

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अध्याय – 12

राजस्थान का एकीकरण

- प्रिय दोस्तों, ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की थी कि 3 जून 1948 तक भारत की सत्ता भारतीयों को सौंप दी जाएगी ।
- इन्होंने नया गर्वनर जनरल लार्ड माउन्टबेटन को नियुक्त किया (भारत का अंतिम गवर्नर जनरल)
- 31 दिसम्बर 1945 को उदयपुर राज्य में पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशन में राजस्थान के एकीकरण का सुझाव दिया गया । राजाओं के वैमनस्य को देखते हुए यह लगने लगा था कि ये लोग स्वयं कोई निर्णय नहीं ले पायेंगे । इसलिए अनुभव किया जाने लगा कि अब केन्द्र सरकार को ही एकीकरण का प्रयास करना होगा ।
- अतः सरदार वल्लभ भाई. पटेल ने 16 दिसम्बर 1948 को यह घोषणा की कि राजस्थान की सभी छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर एक संघ का निर्माण किया जाएगा ।
- केबिनेट मिशन के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने 22 मई 1946 ई. को घोषणा की कि छोटी-छोटी रियासतों को आपस में मिलाकर बड़ी इकाई.यां बना लेनी चाहिए या पड़ौस की बड़ी रियासतों या प्रांतों में मिल जाना चाहिए ।
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम - 1947 की आठवीं धारा के अनुसार देशी रियासतों पर से ब्रिटिश प्रभुसत्ता का अंत हो गया ।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में तीन श्रेणी के राज्य थे –

(1) ए श्रेणी - वे राज्य, जो पूर्व में प्रत्यक्ष ब्रिटिश नियंत्रण में थे जैसे बिहार, बम्बई., मद्रास आदि । इनके प्रमुख राज्यपाल (गवर्नर) कहलाते थे ।

(2) बी श्रेणी - वे राज्य, जो स्वतंत्रता के बाद छोटी-बड़ी रियासतों के एकीकरण द्वारा बनाये गए थे, जैसे राजस्थान, मध्य भारत आदि । इनके प्रमुख राजप्रमुख कहलाते थे ।

(3) सी श्रेणी - ये वे छोटे-छोटे राज्य थे, जिन्हें ब्रिटिश काल में चीफ कमिशनर के प्रान्त कहा जाता था जैसे अजमेर, दिल्ली ।

- लार्ड माउन्टबेटन ने 3 जून 1947 को भारत विभाजन/डिकी बर्ड प्लान/बेंटन योजना प्रारंभ किया।

इस अधिनियम की धारा 14 के अनुसार अब देशी रियासतें या तो भारत या पाकिस्तान में अपना विलय कर सकती थी या अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रख .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

FREE SAMPLE

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – I

सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, राजस्थान के भूगोल का अध्ययन करने के लिए हम इसे निम्न दो भागों में विभाजित करेंगे-

1. सामान्य परिचय
2. भौतिक स्वरूप

1. सामान्य परिचय-

प्रिय छात्रों, सामान्य परिचय के अंतर्गत हम राजस्थान के निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे-

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख
(ख) राजस्थान की स्थिति
(ग) राजस्थान का विस्तार
(घ) राजस्थान का आकार
(ङ) राजस्थान की आकृति

2. भौतिक स्वरूप - इसी प्रकार भौतिक स्वरूप के अंतर्गत हम निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे–

(क)पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश
(ख)अरावली पर्वतीय प्रदेश
(ग) पूर्वी मैदानी प्रदेश
(घ) दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

1. राजस्थान का परिचय

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख- राजस्थान- राजाओं का स्थान

प्रिय छात्रों, राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक "मुहणोत नैणसी"ने भी अपनी पुस्तक "नैणसी री ख्यात" में भी राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।

महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।

जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सन् 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को "राजपूताना" शब्द कहकर पुकारा । इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक "मिलिट्री मेमोरीज ऑफ़ मिस्टर थॉमस" में किया है।

जॉर्ज थॉमसः- जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे जो कि 18वीं. सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे। इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।

विलियम फ्रैंकलिनः-विलियम फ्रैंकलिन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ट मित्र थे। उन्होनें 1805 जॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।

अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार "अबुल फजल" ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुभूमि" शब्द का प्रयोग किया है।

1829 ईस्वी. में "कर्नल जेम्स टॉड" ने अपनी पुस्तक "एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" में सर्वप्रथम राजस्थान को "रजवाड़ा" या राजस्थान का नाम दिया था।

कर्नल जेम्स टॉडः- कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1821 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे। कर्नल जेम्स टॉड यूनाइटेड किंगडम के मूल निवासी थे, उन्होनें अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है।

कर्नल जेम्स टॉड को "राजस्थान के इतिहास का पितामह" कहा जाता है।

कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को "सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" के नाम से भी जानते हैं।

इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "गौरीशंकर - हरीशचंद्र ओझा" ने किया था। इसे हिंदी में "प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण" कहते हैं। महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गांव का नाम "टाडगढ़" रख दिया था, जो कालांतर में टाडगढ़ कहलाने लगा जो कि आज अजमेर जिलें की तहसील का मुख्यालय है।

प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे।

(I) राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" पर :- पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा–

(क)अंगारालैंड / युरेशियल प्लेट

(ख)गोंडवाना लैंड प्लेट

(ग) टेथिस सागर

(घ) पेन्जिया

(ङ) पेंथाल्जा

नोटः- प्रिय छात्रों, कृप्या ध्यान दें कि – आज से करोड़ों वर्ष पहले पृथ्वी सिर्फ दो हिस्सों में बटी हुई थी।

1.स्थल

2.जल

जैसा कि आज भी है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखें तो हमें यह कई भागों में विभाजित हुआ दिखता है, जैसे सात महाद्वीप अलग-अलग हैं। उनके भी कई देश एक-दूसरे से काफी अलग अलग है इत्यादि। लेकिन बहुत पहले संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था; इसी स्थलीय क्षेत्र को "पेन्जिया" के नाम से जानते थे तथा बाकी बचे हुए हिस्से को (जल वाले क्षेत्र को)"पेंथाल्जा" के नाम से जानते थे। अब इसे नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-

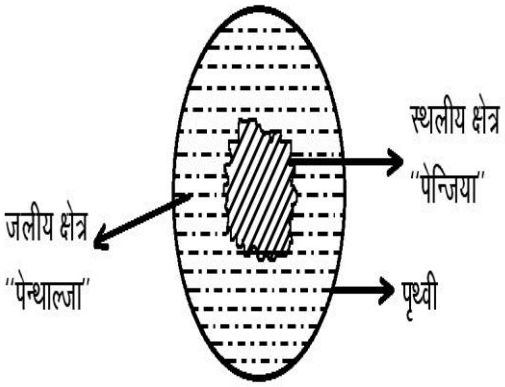

प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पेन्जिया (स्थलीय क्षेत्र)दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ । इस स्थलीय क्षेत्र को "अंगारा लैंड / यूरेशियन प्लेट" के नाम से जानते हैं।

इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को "गोंडवाना लैंड"'प्लेट' के नाम से जानते हैं। दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-

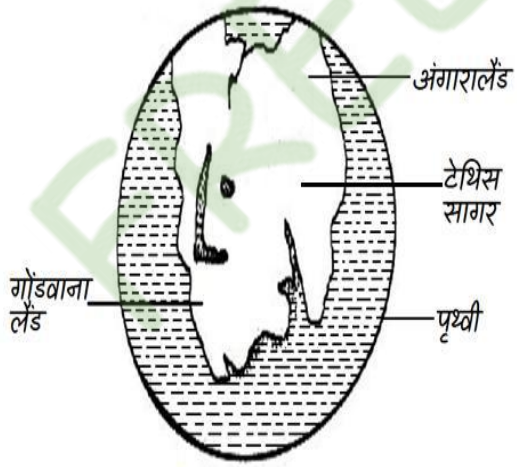

नोटः- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीलें "टेथिस सागर" के अवशेष हैं तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वतमाला) एवं दक्षिण पूर्वी पठार भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से हैं।

टेथिस सागर : - टेथिस सागर गोंडवाना लैंड प्लेट और युरेशियल प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है, जो कि एक छिछला और संकरा सागर था। और इसी में जमा अवसादों के प्लेट विवर्तनिकी के परिणामस्वरुप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।

प्रिय छात्रों, अब तक हम अंगारालैंड, गोंडवानालैंड, टेथिस सागर, पेंजिया तथा पेंथाल्जा का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर चुके हैं। अब हम राजस्थान की स्थिति, पृथ्वी पर का अध्ययन करते हैं। नीचे दिए गए मानचित्रों को ध्यान से समझिए-

मानचित्र - 2

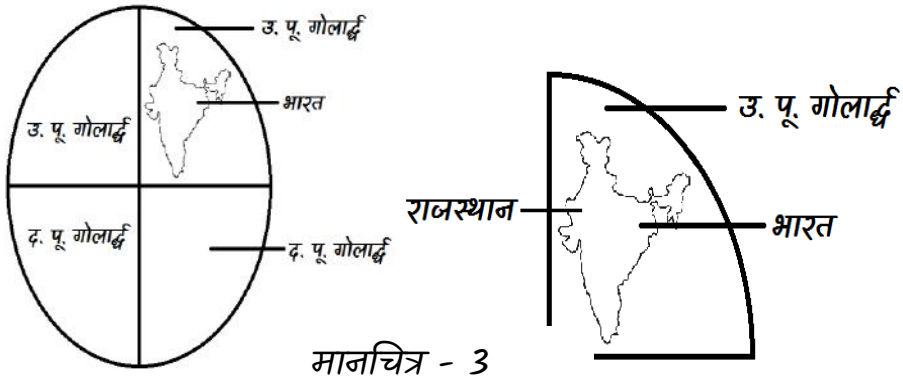

मानचित्र - 3

प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं।

मानचित्र-। पृथ्वी को भूमध्य रेखा से दो भागों में बांटा गया है :-

1. उत्तरी गोलार्द्ध
2. दक्षिणी गोलार्द्ध

इसी प्रकार ग्र मानचित्र - 4 ो भागों में बाँटती है-

1. पूर्वी क्षेत्र
2. पश्चिमी क्षेत्र

(देखे मानचित्र- 2)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट :-

1. विश्व (अर्थात् पृथ्वी पर) में राजस्थान "उत्तर-पूरब" दिशा में .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- **अरावली पर्वतमाला का विस्तार एवं स्थिति –**

1. अरावली पर्वतमाला का उद्भव सबसे दक्षिण में अरब सागर में स्थित मिनिकॉय द्वीप (लक्षद्वीप) से माना जाता है अर्थात् अरावली की जड़ें अरब सागर से प्रारंभ होती हैं इसलिए अरब सागर को अरावली की "उत्पत्ति स्थल या पिता" कहा जाता है

2. भारत में अरावली पर्वतमाला का विस्तार दक्षिण-पश्चिम में गुजरात के "पालनपुर" नामक स्थान से उत्तर पूर्व में दिल्ली के "पालम" नामक स्थान पर समाप्त होती है यहां पर इन्हें "रायसीना की पहाड़ियों" के नाम से जाना जाता है इन्हीं रायसीना की पहाड़ियों पर "राष्ट्रपति भवन" बना हुआ है पालनपुर (गुजरात) से पालम (दिल्ली) तक इसकी कुल लंबाई 692 किलो मीटर है।

राष्ट्रपति भवन -

यह भारत के राष्ट्रपति का राजकीय निवास होता है यह अद्भुत एवं विशाल भवन रायसीना पहाड़ी जो कि अरावली पर्वत श्रेणी का हिस्सा है पर स्थित है । यह दुनिया की विशालतम इमारतों में से एक है राष्ट्रपति भवन वास्तु कला का उत्कृष्ट नमूना है । इस भवन के निर्माण की सोच सर्वप्रथम 1911 में उस समय उत्पन्न हुई जब दिल्ली दरबार ने निर्णय किया कि भारत की राजधानी कोलकाता से दिल्ली स्थानांतरित की जाएगी इसी समय यह भी निर्णय लिया गया था कि दिल्ली में ब्रिटिश वायसराय के रहने के लिए एक आलीशान भवन का निर्माण किया जाएगा । यह इमारत 330 एकड़ में फैली हुई है । इस विशाल इमारत का डिजाइन सर एडविन लुटियंस द्वारा तैयार किया गया था।

3. राजस्थान में अरावली पर्वतमाला का विस्तार सिरोही जिलें के "खेड ब्रह्मा" से झुंझुनू जिलें के "सिंघाना" (खेतड़ी) तक तथा दक्षिण की ओर अलवर तक है। राजस्थान में अरावली की कुल लंबाई 550 किलो मीटर है।
4. अरावली की कुल लंबाई का 79.48%(लगभग 80%) भाग राजस्थान में स्थित है । जिसका आकार एक वाद्ययंत्र "तानपुरे" के समान है। अरावली पर्वतमाला की तुलना अमेरिका मे स्थित अल्पेशियन पर्वतों से की जाती है जो कि लगभग 60 से 55 करोड़ वर्ष पुराने हैं।
5. उत्पत्ति के आधार पर अरावली पर्वतमाला एक वलित पर्वत (जिसका विकास हो रहा है) तथा वर्तमान में एक अवशिष्ट पर्वत है। इसकी औसत ऊंचाई पहले 5000 मीटर थी जो कि वर्तमान में 920 मीटर समुद्र तल से है।
6. अरावली पर्वतमाला का विस्तार राज्य के 11 जिलों में है यह राज्य के लगभग बीच में स्थित है इसलिए राज्य को दो भागों में विभाजित करती है पूर्वी भाग व दक्षिणी भाग।
7. अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में 13 जिलें आते हैं जिनमें से 12 में मरुस्थल है और एक जिला ऐसा है जो कि सिरोही है जिसमें मरुस्थल नहीं है अरावली के पश्चिम में लगभग 60% भू भाग पर राज्य की 40% जनसंख्या निवास करती है।

8. अरावली के पूर्व में राज्य के 20 जिलें आते हैं राजस्थान के कुल गैर मरुस्थलीय जिलें 21 है जिनमें से अरावली के पूर्व में 20 तथा एक सिरोही है।

9. अरावली का सर्वाधिक विस्तार उदयपुर जिलें में है तथा सबसे कम विस्तार वाला जिला अजमेर है और अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी "गुरु शिखर" है और जबकि सबसे नीचे चोटी "अजमेर जिलें " में पुष्कर घाटी है।

गुरुशिखर जिसे गुरुमाथा भी कहा जाता है। हिमालय पर्वत के माउंट एवरेस्ट तथा पश्चिमी घाट के नीलगिरी पर्वत के मध्य की सबसे ऊंची चोटी है । कर्नल जेम्स टॉड ने यहां पर संतों को तपस्या करते हुए देखा था इससे प्रभावित होकर कर्नल जेम्स टॉड ने इसे संतो का शिखर का नाम दिया है । इसकी औसत ऊंचाई 1722 मीटर है। इसकी चोटी पर दत्तात्रेय ऋषि का मंदिर बना हुआ है, यदि इस मंदिर की ऊंचाई को शामिल करें तो गुरु शिखर की कुल ऊंचाई 1727 मीटर होती है । गुरुशिखर के नीचे राज्य का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल "माउंट आबू" स्थित है ।

10. अरावली पर्वतमाला राज्य की नदियों को दो भागों में विभाजित करती है पश्चिमी भाग और पूर्वी भाग अरावली के पश्चिम में ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अध्याय – 3

नदियां एवं झीलें

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम लोग "राजस्थान का अपवाह तंत्र" के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले जानते हैं कि क्या होता है "अपवाह तंत्र"?

अपवाह तंत्र -

जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं तब उसे अपवाह तंत्र कहते हैं ।अपवाह तंत्र में नदियां एवं उसकी सहायक नदियां शामिल होती हैं।

जैसे गंगा और उसकी सहायक नदियां मिल कर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं उसी प्रकार सिंधु और उसकी सहायक नदियां जैसे झेलम, रावी, व्यास, चिनाब एक अपवाह तंत्र बनाती है, उसी प्रकार ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियां भी अपवाह तंत्र बनाती हैं। भारत की सबसे लंबी नदी गंगा है तथा सबसे बड़ा अपवाह तंत्र वाली नदी ब्रह्मपुत्र है। अब हम अध्ययन करेंगे राजस्थान के अपवाह तंत्र के बारे में।

राजस्थान में कई नदियां हैं जैसे लूनी, माही, बनास, चंबल इसके अलावा यहां पर स्थित कई झीलें भी इस अपवाह तंत्र में शामिल होती हैं ।प्रिय छात्रों जैसा कि आपको पता है राजस्थान में अरावली पर्वतमाला स्थित है यह राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है इसलिए यह राज्य की नदियों को स्पष्ट रूप से दो भागों में विभाजित करती है। इसके पूर्व में बहने वाली नदियां अपना जल बंगाल की खाड़ी में तथा इसके पश्चिम में बहने वाली नदियां अपना जल अरब सागर में लेकर जाती है । राजस्थान के अपवाह तंत्र को हम दो भागों में विभक्त करेंगे फिर उनके अन्य क्रमशः 5 एवं 3 उप-भाग होंगे -

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण
2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण

1. **क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण को चार भागों में बांटा गया है -**

(अ) उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान- इस तंत्र में लूनी, जवाई, सूकड़ी, बांडी, सागी जोजड़ी घग्घर, कातली नदियाँ शामिल होती है ।

(ब)दक्षिणी -पश्चिमी राजस्थान - इसमें पश्चिमी बनास, साबर मती, वाकल, आदि शामिल होती है ।

(स)दक्षिणी राजस्थान - इसमें माही .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं । सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे -

I. **चंबल नदी –**प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्वपूर्ण विशेषताएं -

- चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्यीय सीमा निर्धारित करती है इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम है, चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी ।
- इस नदी की कुल लंबाई 966 किलों मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है यह नदी मध्यप्रदेश में 335 किलों मीटर, राजस्थान में 135 किलों मीटर, उत्तरप्रदेश में 275 किलों मीटर बहती है यह नदी राजस्थान,

मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के मध्य 24। किलों मीटर की अंतर्राज्यीय सीमा भी बनाती हैं।

- इस नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश राज्य के इंदौर जिलें हुआ । क्षेत्र के विंध्याचल पर्वतमाला में स्थित 616 मीटर ऊंची "जाना पाव की पहाड़ी" से होता है मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बांध "गांधी सागर बांध" बना हुआ हैं।
- यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिलें में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है इस नदी पर भैंसरोडगढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।
- चंबल नदी पर चित्तौड़गढ़ जिलें के रावतभाटा नामक स्थान पर राणाप्रताप सागर बांध बना हुआ है, जो कि जल भराव की क्षमता से राज्य का सबसे बड़ा बांध है इस बांध का 113 वर्ग किलों मीटर में फैला हुआ हैं।
- चंबल नदी चित्तौड़गढ़ जिलें में बहने के बाद कोटा जिलें में प्रवेश करती है, कोटा जिलें में इस नदी पर जवाहर सागर व कोटा बैराज बांध बना हुआ है कोटा बैराज बांध जल विद्युत उत्पादन के लिए उपयोग में नहीं लिया जाता । कोटा जिलें के नानौरा नामक स्थान पर "काली सिंध नदी" चंबल में आकर मिल जाती है यह स्थान प्राचीन काल में कपिल मुनि की तपस्या स्थली रहा था।
- कोटा तथा बूंदी जिलें की सीमा निर्धारित करती हुई यह नदी बूंदी जिलें में प्रवेश करती है बूंदी जिलें की केशोरायपाटन नामक स्थान पर इस नदी का सर्वाधिक गहरा भाग है जो 113 मीटर की गहराई तक है बूंदी जिलें से आगे चल कर यह नदी कोटा तथा सवाईमाधोपुर की सीमा निर्धारित करती हैं।
- सवाईमाधोपुर जिलें के खंडार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर बनास तथा सीप नदी चंबल में आकर मिलती है तथा यहां त्रिवेणी संगम बनाते हैं। सवाई माधोपुर जिलें के पालिया नामक स्थान पर चंबल नदी की सहायक नदी पार्वती इसमें आकर मिलती हैं। धौलपुर जिलें के पीलहाट होते हुए यह नदी राजस्थान से बाहर निकलती है और उत्तरप्रदेश राज्य में प्रवेश कर जाती हैं।

- अंत में यह नदी उत्तरप्रदेश राज्य के इटावा जिलें के मुरादगंज कस्बे में 275 किलों में किलों मीटर बहने के बाद यमुना में मिल जाती है यह यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

चंबल नदी से संबंधित अन्य तथ्य -

- चंबल नदी राज्य के कुल अपवाह क्षेत्र का 20.90% भाग मे है। यह नदी "गागेयसूस" नामक स्तनपाई जीव के लिए प्रसिद्ध है।
- चंबल यूनेस्को की विश्व धरोहर के लिए नामित राज्य की एकमात्र नदी है बहाव क्षमता की दृष्टि से राज्य की सबसे लंबी नदी चंबल ही है।
- यह सर्वाधिक सतही जल वाली नदी है इसीलिए इसे "वाटरसफारी नदी" भी कहा जाता है।
- चंबल नदी से सर्वाधिक .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

.....अब हम खारे पानी की झीलों को सबसे पहले विस्तार में समझते हैं और फिर मीठे पानी की झीलों को पढ़ेंगे।

(अ) खारे पानी की झीलें -

I. सांभर झीलः-

- राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोंमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।
- इस झील का विस्तार 3 जिलों में है - जयपुर, अजमेर और नागौर, लेकिन सर्वाधिक विस्तार जयपुर जिलें में है और इसका प्रशासनिक अधिकार नागौर जिलें का है।
- इस झील की लंबाई दक्षिण पूरव से उत्तर पश्चिम की ओर लगभग 32 किलों मीटर है और चौड़ाई 3 से 12 किलोंमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र 500 वर्ग किलोंमीटर है।
- सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं ।इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा उत्पादन कार्य किया जा रहा है ।इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन उत्पादन होता है जो भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील से ही उत्पादित होता है।

इस झील से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

●सांभर झील "स्वाईसरुबीना"नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है ।इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।

● यह झील अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -

तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात् तीर्थों की नानी,

शाकंभरी माता का मंदिर,

संत हिमामुद्दीन की पुण्य भूमि,

जहांगीर का ननिहाल,

अकबर की विवाह स्थली

चौहानों की राजधानी

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- ऐसा माना जाता है कि इस झील का निर्माण बिजोलिया शिलालेख के अनुसार चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान द्वारा करवाया गया था।
- इस झील का आकार आयताकार है। इस झील पर सन् 1857 में अंग्रेजों द्वारा स्थापित सांभर साल्ट म्यूजियम स्थित है।
- पर्यटन के क्षेत्र में रामसर साइट के नाम से भी इसे जाना जाता है।

2. पचपदरा झील:-

- ऐसा माना जाता है कि 400 ईसा पूर्व पंचानामक एक भील व्यक्ति के द्वारा एक दलदल को सुखाकर इस झील के आस - पास की बस्तियों का निर्माण करवाया गया था इसलिए इस झील को पचपदरा झील कहते हैं
- यह झील राजस्थान राज्य के बाड़मेर जिलें के बालोतरा में स्थित है।
- इस झील से प्राचीन समय से ही खारवाल जाति के 400 परिवार मोरली वृक्ष की

.....

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 5

जलवायु

प्रिय पाठकों, इस अध्याय में हम राजस्थान की जलवायु के बारे में अध्ययन करेंगे सबसे पहले हम समझते हैं कि जलवायु क्या होती है?

जलवायु –किसी स्थान पर दीर्घ काल की औसत वायुमंडलीय दशाओं को (तापमान, वायुदाब, आद्रता, वर्षा, वायु वेग) को जलवायु कहा जाता है । (समय लगभग 30 से 35 वर्ष)

मौसम –किसी स्थान पर अल्प समय की औसत वायुमंडलीय दशाओं को मौसम कहा जाता है जैसे कुछ घंटे या कुछ दिन ।

अतः निष्कर्ष निकालते हैं कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के कारण स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन हो रहे हैं, जैसे बाड़मेर में बाढ़, वर्षा की तीव्रता व आवृत्ति में परिवर्तन एवं अचानक वायु परिवर्तन हो रहे हैं अतः इन्हें रोकने के लिए क्रमबद्ध विकास पर्यावरण मित्र विकास एवं पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता है।

राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक -

प्रिय छात्रों अब हम यह समझेंगे कि राजस्थान की जलवायु के कौन - कौन से कारक हैं जो प्रभावित करते हैं अर्थात् किन की वजह से राजस्थान की जलवायु में परिवर्तन आता है?

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जिसके अलग - अलग स्थानों पर अलग - अलग प्रकार की विशेषताएं पाई जाती है जैसे कहीं पर्वत हैं तो कहीं पर पठार, कहीं मरुस्थल, कहीं मैदानी भाग इत्यादि यह सब राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करते हैं आइए जानते हैं कैसे -

I. अक्षांश एवं देशांतर स्थिति -

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23 डिग्री 3 मिनट उत्तरी अक्षांश से 30 डिग्री 12 मिनट उत्तरी अक्षांश तक विस्तृत है इसी कारण राजस्थान के बाँसवाड़ा जिलें से नीचे का भाग कर्क रेखा के नीचे ऊष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में एवं राजस्थान के ऊपर का भाग उपोष्ण

कटिबंधीय क्षेत्र में आता है ग्रीष्म काल के समय सूर्य की किरणें बाँसवाड़ा जिलें में लगभग सीधा एवं गंगानगर जिलें में सर्वाधिक तिरछी होती है राजस्थान में ऊष्ण एवं उपऊष्ण कटिबंधीय जलवायु पाई जाती है जिसकी वजह से यहां पर मौसम में बदलाव देखने को मिलता है।

2. समुद्र तल से दूरी -

राजस्थान की समुद्रतल से दूरी अधिक होने के कारण यहां शुष्क जलवायु पाई जाती है राजस्थान की अरब सागर से दूरी 400 किलों मीटर एवं कच्छ की खाड़ी से .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ

RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 8

बेरोजगारी

- **राजस्थान में बेरोजगारी दर**
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, राजस्थान में 299 लाख श्रमिक हैं, जिनमें से 244 लाख ग्रामीण क्षेत्रों तथा 55 लाख शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं।
- राज्य में कार्य सहभागिता दर 1981 की 36.6 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2011 में 43.6 प्रतिशत हो गई है। वर्ष 2011 में यह पुरुषों के लिए 51.5 प्रतिशत व महिलाओं के लिए 35.1 प्रतिशत थी।
- गत दशक में कार्य शक्ति में 1.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय सेम्पल सर्वे के 61वें दौर (2004-05) के अनुसार चालू दैनिक स्थिति (सी.डी.एस.) के अनुसार राजस्थान में बेरोजगारी की दर 5.25% रही है, जबकि 1999-2000 के 55वें दौर के अनुसार यह 3.13 प्रतिशत रही थी। राष्ट्रीय सेम्पल सर्वे के 66वें दौर (2009-10) के अनुसार देश में सबसे कम बेरोजगारी में राजस्थान तीसरे स्थान पर है।
- प्रति हजार व्यक्तियों में बेरोजगारी में राष्ट्रीय औसत 38 के स्थान पर राजस्थान में केवल 17 है।

पीरियोडिक लेबर फोर्स सर्वे (PLFS) रिपोर्ट-2019

सरकार ने नेशनल सैंपल सर्वे (एनएसएसओ) द्वारा जारी किए जाने वाले पीरियोडिक लेबर फोर्स (पीएलएफएस) के नतीजे जारी किए हैं। पीएलएफएस की रिपोर्ट और सीएमईआई-सीपीडीएक्स की रिपोर्ट में वर्ष 2017-18 में बेरोजगारी की दर करीब 6.1%

.....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान के प्राकृतिक संसाधन

अध्याय – 10

राजस्थान में खनिज

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान में पाए जाने वाले प्रमुख खनिज संसाधनों का अध्ययन करेंगे सबसे पहले हम समझते हैं कि खनिज संसाधन किसे कहते हैं।

खनिज

खनिज या खनिज पदार्थ ऐसे भौतिक पदार्थ हैं जो खान से खोद कर निकाले जाते हैं । कुछ उपयोगी खनिज पदार्थों के नाम हैं – लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससे एल्युमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तान व भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि ।

पृथ्वी की भू - पट्टी में पाई जाने वाली यौगिक जिनमें धातुओं की मात्रा पाई जाती है, वह खनिज कहलाते हैं।

ऐसे खनिज जिनमें धातु की मात्रा अधिक होती है तथा उनसे धातुओं का निष्कर्षण करना आसान होता है उन्हें अयस्क कहते हैं।

जैसे-

धातु	अयस्क
हेमेटाइट	लोहा
बॉक्साइट	एल्युमिनियम
गैलेना	शीशा
डोलोमाइट	कैल्शियम
सिडेराइट	लौहा
मेलेकाइट	तांबा

खनिजों के प्रकार

खनिज तीन प्रकार के होते हैं; धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिज।

धात्विक खनिजः

लौह धातुः लौह अयस्क, मैंगनीज, निकेल, कोबाल्ट, आदि।

अलौह धातुः तांबा, लेड, टिन, बॉक्साइट, आदि।

बहुमूल्य खनिजः सोना, चाँदी, प्लैटिनम, आदि।

अधात्विकखनिजः

अभ्रक, लवण, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, चूना पत्थर, संगमरमर, बलुआ पत्थर, आदि।

ऊर्जा खनिजः कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस ।

राजस्थान में खनिज संसाधन –

प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहां पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण या यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है । और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है । दोस्तों खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है । राजस्थान में कुल होने वाले देश के खनन क्षेत्र का 5.7% क्षेत्रफल आता है । देश में सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित है । देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।

राजस्थान में 80 से अधिक खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं कौन - कौन से खनिज यहां पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है -

पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट

2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -

जस्ता - 97%, फ्लोराइड 96 %, एबेस्टोस 96 %, रॉकफोस्फेट 95%,

.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

- **अभ्रक**

- अभ्रक आग्नेय एवं कायान्तरिक चट्टानों में टुकड़ों के रूप में पाया जाता है।
- इसका उपयोग विद्युत उद्योगों में, सजावटी सामानों में एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।
- यह ताप का कुचालक होता है।
- **माइकेनाइट उद्योग-** अभ्रक के चूरे से ईंट तथा चादरें बनाने वाले उद्योग को माइकेनाइट उद्योग कहा जाता है।
- इस उद्योग के सर्वाधिक कारखाने भीलवाड़ा जिलें में पाये जाते है।

रूबी अभ्रक :-

- सफेद अभ्रक को रूबी अभ्रक भी कहा जाता है।

बायोटाइट अभ्रक :-

- गुलाबी अभ्रक को बायोटाइट अभ्रक भी कहा जाता है।
- इसका उपयोग दवाईयाँ, सजावटी सामान, वायुयान एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र :-

- भीलवाड़ा- शाहपुरा, कोटला, फुलिया, नटकीखेड़ी।
- अभ्रक का सर्वाधिक उत्पादन भीलवाडा में होता है
- अजमेर- ब्यावर, जालिया, भिनाय
- उदयपुर
- जयपुर- बंजारी खान
- राजस्थान का उत्पादन की दृष्टि से तीसरा स्थान है।

रॉक फास्फेट

- जिन चट्टानों में ट्राईकैल्सियम फास्फेट का प्रतिशत अधिक पाया जाता है उन्हें रॉक फास्फेट चट्टान कहा जाता है।
- इसका उपयोग रासायनिक खाद के उत्पादन में अत्यधिक किया जाता है।

क्षेत्र

- झामरकोटड़ा (उदयपुर)-देश की सबसे बडी रॉक फास्फेट खान
- इसके अलावा उदयपुर के माटोन, कानपुरा, नीमच आदि से भी इनका उत्पादन होता है।
- जैसलमेर- लाठी, सीरिग, बिरमानिया क्षेत्र, फतेहगढ
- जयपुर- अचरोल
- सीकर- करपुरा

एस्बेस्टॉस (10%) (मिनरलसिल्क)

- उपयोग- सीमेंट, चादर, रेल के डिब्बे, जहाज, टाइल्स।
- एस्बेस्टॉस के दो प्रकार होते हैं-
- क्राइसोलाइट
- इम्फीबॉल- यह घटिया किस्म का एस्बेस्टॉस राजस्थान में पाया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र :

- उदयपुर- खेरवाड़ा, ऋषभदेव, सलूम्बर

राजसमन्द- .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अध्याय – II

पशु संसाधन

पशुपालन

राजस्थान में 20 वीं पशुगणना

- 20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में कुल पशुधन 5.68 मिलियन (5.68 करोड़) है। जो कि 2012 की 5.77 लाख (5.77 करोड़) था। इस प्रकार 2019 में कुल पशुओं की संख्या में 1.66 प्रतिशत की कमी देखी गई है।
- राजस्थान 568 लाख पशुओं के साथ भारत में दूसरे स्थान पर है। पहला स्थान उत्तर प्रदेश का है।

- राजस्थान गोवंश के मामले में 2012 के 133 लाख की तुलना में 2019 में 139 लाख पशुओं के साथ छठे स्थान पर हैं। गोवंश में 4.41% की वृद्धि हुई है।
- राजस्थान भैंसों के मामले में 2012 के 1.30 लाख की तुलना में 2019 में 1.37 लाख पशुओं के साथ दूसरे स्थान पर हैं। भैंसों में 5.53% की वृद्धि हुई है।

- राजस्थान भेड़ की संख्या के मामले में 2012 के 9.1 मिलियन की तुलना में 2019 में 79 लाख पशुओं के साथ चौथे स्थान पर हैं। भेड़ में 5% की कमी हुई है।
- राजस्थान बकरी के मामले में 2012 के 216.7 लाख की तुलना में 2019 में 208.4 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर हैं। बकरियों की संख्या में 3.81% की कमी हुई है।

- राजस्थान ऊंट के मामले में 2012 के 3.26 लाख की तुलना में 2019 में 213 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर हैं। ऊंटों की संख्या में 34.69% की कमी हुई है।
- राजस्थान घोड़ों के मामले में 2012 के 38 लाख की तुलना में 2019 में 34 लाख पशुओं के साथ तीसरे स्थान पर हैं। घोड़ों की संख्या में 10.85% की कमी हुई है।

- राजस्थान गधों के मामले में 2012 के 81 लाख की तुलना में 2019 में 23 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर हैं। गधों में 71.31% की कमी हुई है।

पशु	कुल संख्या (लाख)	अधिकतम	न्यूनतम
बकरी	208.4	बाड़मेर	धौलपुर

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)

राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान समय सामयिकी (करंट अफेयर्स)

मार्च -

1. भरतपुर की नीतिशा अग्रवाल (9 वर्ष) नॉनस्टॉप डांस में एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने वाली भारत की पहली बच्ची बनी हैं। उन्होंने एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में ग्रांड मास्टर का टाइटल प्राप्त किया।
2. 1 मार्च को राज्य कोविड-19 टीकाकरण कोविन 2.0 शुरू हो गया।

   इस चरण में 60 वर्ष से अधिक और 45 से 60 वर्ष के बीच की आयु वाले गंभीर बीमारी के शिकार लोगों को टीका लगाया जा रहा है।

3. स्वच्छ मशहूर स्थलों की सूची

   जल शक्ति मंत्रालय के पेयजल और स्वच्छता विभाग ने स्वच्छ मशहूर स्थलों के चौथे चरण के तहत देश के 12 स्थानों को चुना है। इनमें राजस्थान के कुंभलगढ़, जैसलमेर किला और रामदेवरा को चुना गया है।

4. मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 24 फरवरी को बजट में अनाथ, उपेक्षित बच्चों के पुनर्वास के लिए गोरा धाय ग्रुप फोस्टर केयर संचालन की योजना रखी।
   - यह योजना पूरे 33 जिलों में शुरू की जाए।
5. पाली के जैतारण तहसील के खेड़ा रामगढ़ गाँव की मोनिका पटेल का इंडिया की वनडे और टी-20 टीम में चयन हुआ है।
6. ड्राइविंग लाइसेंस पर ऑर्गन डोनेशन की इच्छा अंकित करने वाला राजस्थान देश का पहला राज्य है।
7. राजस्थान में 5 अगस्त 2011 को फूड सेफ्टी एक्ट लागू हुआ। लागू होने के 10 साल में एक भी मिलावटखोर को सजा नहीं मिली है।
   - मौजूदा प्रावधान में मिलावटिओं को जमानत पर छोड़ने की व्यवस्था है।

- हाल ही मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मिलावट और नकली दवाओं पर रोक लगाने के लिए क्रिमिनल लॉ (राजस्थान संशोधन) एक्ट 2021 को विधानसभा में पेश किया है।
- राष्ट्रपति से मंजूरी मिलने के बाद यह कानून लागू हो जाएगा।

8. 8 मार्च को राजस्थान और गुजरात के पूर्व राज्यपाल जस्टिस अंशुमान सिंह का निधन हो गया। अंशुमान सिंह ने जनवरी 1999 से 2003 तक राजस्थान के राज्यपाल के रूप में कार्य किया था।

राजस्थान में डेनमार्क के सहयोग से .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अगस्त -

(1)मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 1 अगस्त को 'घर-घर औषधि योजना' एवं 72वें वन महोत्सव का शुभारम्भ किया।

- इस योजना के तहत वन विभाग की ओर से आगामी पांच वर्षों में प्रदेश के सभी 1 करोड़ 26 लाख परिवारों को तुलसी, गिलोय, कालमेघ और अश्वगंधा के आठ-आठ औषधीय पौधे तीन बार निःशुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे।
- योजना का उद्देश्यः- प्रदेश के लोगों की स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा औषधीय पौधों का संरक्षण और संवर्द्धन करना है।
- वन राज्य मंत्री - सुखराम विश्नोई।
- साथ ही मुख्यमंत्री ने 72 वें वन महोत्सव के तहत जयपुर के ग्राम बिलौंची में लगाने के लिए पीपल का पौधा और अन्य पौधों के वाहन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।
- प्रदेश में लघु वन उपज उत्पादन वृद्धि के लिए राज्य वन विकास निगम का गठन किया गया है। साथ ही ताल छापर अभ्यारण्य में वन्यजीव प्रबंधन प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जा रहा है।

(2)हाल ही राजस्थान सरकार के उद्योग विभाग और राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास और निवेश निगम (RIICO) ने राज्य में इच्छुक निर्यातकों को बढ़ावा देने के लिए 'निर्यातक बनो' अभियान शुरू किया है।

(3) आईआईटी जोधपुर में राजस्थान का पहला डूसेन मस्कुलर डिस्ट्रॉफी सेंटर स्थापित किया गया है।

(4) कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए मुखबिर योजना के तहत प्रोत्साहन राशि ढाई लाख रुपये से तीन लाख रुपए बढा दी गई है।

(5)चिकित्सा मंत्री रघु शर्मा ने अर्ली कैंसर डिटेक्शन वैन का शुभारंभ किया है। इस वैन द्वारा कैंसर से संबंधित महत्वपूर्ण जांचें मौके पर ही की जा सकेंगी।

(6)प्रदेश के 6 जिलों में जिला परिषद् एवं पंचायत समिति सदस्यों के आम चुनाव की घोषणा

राज्य निर्वाचन आयोग ने प्रदेश के 6 जिलों (भरतपुर, दौसा, जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर एवं सिरोही) के जिला परिषद् एवं पंचायत समिति सदस्यों के आम चुनाव की घोषणा कर दी है। 3 चरणों में होने वाले चुनाव के लिए 26 अगस्त, 29 अगस्त और 1 सितंबर को मतदान होगा, जबकि 4 सितंबर को संबंधित जिला मुख्यालयों पर मतगणना करवाई जाएगी। चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही इन सभी 6 जिलों के जिला परिषद् एवं पंचायत समिति निर्वाचन क्षेत्रों में आदर्श आचरण संहिता के प्रावधान तुरन्त प्रभाव से लागू हो गए हैं, जो चुनाव प्रक्रिया समाप्ति तक लागू रहेंगे।

(7) डॉ. सतीश कुमार गर्ग राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति बने है।

(8)ग्रामीण खेल

- राजस्थान सरकार अक्टूबर-नवंबर 2021 में 44795 राजस्व गांवों में 6 तरह के खेल आयोजित करेगी।
- इसके बाद 11341 ग्राम पंचायतों का मुकाबला होगा।
- जो गाँव में स्टेट लेवल पर विजेता बनेगा उसे क्षेत्र को ईनाम स्वरुप में स्टेडियम दिया जाएगा।
- राजस्थान ऐसे खेल आयोजित करने वाला देश का पहला राज्य बनेगा।

6 खेल:-

1. हॉकी 2.कबड्डी

3. खो-खो (महिला)

4. टेनिस बॉल क्रिकेट

5. शूटिंगबॉल 6. वालीबॉल

(9) आईपीएस नीना सिंह राजस्थान पुलिस की पहली महिला डीजी (महानिदेशक) बनी है।

(10) 6 अगसत 2021 को राजस्थान को वन धन योजना में .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE

राजस्थान की प्रमुख योजनाएँ 2021 -

अल्पसंख्यक मामलात मंत्री शाले मोहम्मद के अनुसार नववर्ष 2021 के आगाज पर 'मुख्यमंत्री मदरसा आधुनिकीकरण योजना' के तहत 36 मदरसों को विनिर्माण कार्यों के लिए 538 लाख रुपये की प्रशासनिक स्वीकृति जारी की गई है।

- **कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना 2021**

➢ पहली बार इस योजना में सीबीएसई की छात्राओं को भी शामिल किया गया है। अब इस योजना में सीबीएसई की छात्राओं की हिस्सेदारी 25% की रहेगी।

➢ गौरतलब है, कि इससे पहले इस योजना में केवल राजस्थान बोर्ड से पास छात्राओं को ही शामिल किया जाता था ।

➢ इस बार 10,050 स्कूटियों का वितरण होगा।

➢ मुख्यमंत्री गहलोत ने वर्ष 2019 - 20 के बजट में इसकी घोषणा की थी।

➢ कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना 2021 में सभी वर्गों की 12वीं पास मेधावी छात्राओं को सरकार मुफ्त स्कूटी देगी।

ओलंपिक में स्वर्ण जीतने पर मिलेंगे 3 करोड़ रुपए

➢ मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने ओलंपिक, एशियाई तथा राष्ट्रमंडल जैसे अंतर्राष्ट्रीय खेलों में पदक जीतने पर प्रदेश के खिलाड़ियों को दी जाने वाली इनामी राशि में 3 से 4 गुना तक बढ़ोतरी करने का फैसला किया है।

➢ अब ओलंपिक में स्वर्ण जीतने पर 3 करोड़ रुपए मिलेंगे।

➢ रजत पदक विजेता को 2 करोड़ रुपए और कांस्य पदक विजेता को 1 करोड़ रुपए की इनामी राशि दी जाएगी।

➢ एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक विजेता को 1 करोड़ रुपए की इनामी राशि दी जाएगी।

- राजस्थान में 18 जनवरी 2021 से बाल आयोग आपके द्वार अभियान शुरू किया जाएगा। इस अभियान की शुरुआत अलवर जिलें से की जाएगी।
- 7 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल कार्यक्रम के तहत वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर योजना के पहले चरण के तहत रेवाड़ी - मदार खंड को देश को समर्पित किया।
- मोदी ने न्यू अटेली स्टेशन से देश की पहली 1.5 किमी लंबी डबल स्टैक इलैक्ट्रिक कंटेनर ट्रेन (मालगाड़ी) को हरी झंडी दिखाकर राजस्थान के न्यू किशनगढ़ स्टेशन के लिए रवाना किया। यह मालगाडी हरियाणा के न्यू रेवाड़ी से अजमेर के न्यू किशनगढ़ मदार तक बने 306 किमी लंबे ट्रैक पर चलाई गई।

➢ इस योजना के तहत कुल 1504 किलोमीटर का ट्रैक तैयार होना है, जो दादरी से जवाहरलाल नेहरू बंदरगाह तक जाएगा। हरियाणा से 177 किमी, राजस्थान से 566 किमी, गुजरात से 565 किमी, महाराष्ट्र से 177 किमी और उत्तर प्रदेश से 18 किमी ट्रैक निकलेगा।

- 30 जनवरी 2021 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि के अवसर पर राजस्थान में आयुष्मान भारत महात्मा गाँधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना के नवीन चरण को लागू किया गया हैं।

➢ इसके तहत लोगों को 5 लाख रुपए तक का वार्षिक बीमा कवर दिया जाएगा।

कौन होंगे पात्र:- इसके तहत सामाजिक आर्थिक जनगणना 2011 के अलावा .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मनोविज्ञान एवं शिक्षाशास्त्र

दोस्तों , मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक तथा दैहिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार में मानव व्यवहार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के व्यवहार को भी सम्मिलित किया जाता हैं।

- "मनोविज्ञान" शब्द का शाब्दिक अर्थ है- मन का विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी भाषा के Psychology शब्द से बना है।
- 'साइकॉलोजी' शब्द की उत्पति यूनानी(लैटिन) भाषा के दो शब्द 'साइकी(Psyche) तथा लोगस(Logos) से मिलकर हुई है। 'साइकी' शब्द का अर्थ -आत्मा है जबकि लोगस शब्द का अर्थ -अध्ययन या ज्ञान से है
  इस प्रकार से हमने समझा की अंग्रेजी शब्द "साइकॉलोजी" का शाब्दिक अर्थ है- आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान।

अब हम मनोविज्ञान की कुछ विचारधाराओं को समझते है _

1. मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान- यह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा है जिसका समय आरम्भ से 16वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक प्लेटो, अरस्तू, देकार्ते, सुकरात आदि को माना जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। साइकॉलोजी शब्द का शाब्दिक अर्थ भी "आत्मा के अध्ययन" की ओर इंगित करता है।

2. मनोविज्ञान मन/मस्तिष्क का विज्ञान -यह मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा है जिसका समय 17 वीं से 18वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक जॉन लॉक, पेम्पोलॉजी, थॉमस रीड आदि थे। आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा के अस्वीकृत हो जाने पर मध्ययुग (17वी शताब्दी) के दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन के

विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। इनमें मध्ययुग के दार्शनिक पेम्पोलॉजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

3. मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान - यह मनोविज्ञान की तीसरी विचारधारा हैं जिसका समय 19वीं शताब्दी माना जाता हैं। इस विचारधारा के समर्थक विलियम वुट, ई.बी.टिचनर, विलियम जेम्स, आदि को माना जाता हैं। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मन या मस्तिष्क के विज्ञान की जगह मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में व्यक्त किया गया। टिचनर, विलियम जेम्स, विलियम वुट आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में स्वीकार करके कहा कि मनोविज्ञान चेतन क्रियाओं का अध्ययन करता हैं।

5. मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान यह मनोविज्ञान की नवीनतम विचारधारा हैं जिसका समय बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से आज तक माना जाता हैं।यह मनोविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विचारधारा हैं। इस विचारधारा के समर्थक वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि को माना जाता हैं। मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को व्यवहार के एक निश्चित विज्ञान के रूप में स्वीकार किया। वर्तमान समय में मनोविज्ञान की इस विचारधारा को ही एक सर्वमान्य विचारधारा के रूप में स्वीकार किया जाता हैं।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं -

वुडवर्थ –"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा। फिर इसने अपने मन को त्यागा। फिर इसने चेतना खोई। अब वह व्यवहार को अपनाये हुए हैं।

वाटसन- "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान हैं।"

मैक्डूगल – "मनोविज्ञान व्यवहार एवं .....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLEE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 2

वृद्धि एवं विकास की संकल्पना

बाल विकास –

अर्थ :- गर्भाकाल से लेकर परिपक्व अवस्था तक का अध्ययन बाल विकास कहलाता है।

परिभाषा :-

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार – बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें गर्भाकाल से लेकर किशोरावस्था के मध्य तक का अध्ययन किया जाता है।

जेम्स ड्रेवर के अनुसार – बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से लेकर परिपक्व अवस्था तक विकासशील मानव का अध्ययन किया जाता है।

बाल विकास का इतिहास :-

रूसो ने पुस्तक - EMILE में बच्चों की शिक्षा का अध्ययन किया है।

काल्पनिक शिष्य का नाम भी EMILE है

बाल विकास का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला व्यक्ति - पेस्टोलोजी, 1774

बाल अध्ययन आंदोलन की शुरुआत - अमेरिका में 1893, स्टेनले हॉल।

(स्टेनले हॉल ने बाल अध्ययन समिति और बालक कल्याण संगठन की स्थापना की तथा पेड़ोलोजिकल सेमीनरी नामक पत्रिका में बाल विकास का अध्ययन किया है।)

प्रथम बाल सुधार गृह की स्थापना - अमेरिका (न्यूयार्क) में 1847

प्रथम बाल निदेशन केंद्र - विलियम हीली - शिकागो 1909

FREE SAMPLE

भारत में बाल अध्ययन की शुरुआत - 1930

अभिवृद्धि (Groth) – सामान्य रूप से व्यवहारिक शब्दावलियो में जिस के लिए वृद्धि का प्रयोग किया जाता हैं। वह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक परिक्षेपो में अभिवृद्धि की प्रक्रिया कहलाती हैं।

- अभिवृद्धि की प्रक्रिया के अन्तर्गत किसी भी बालक का शारीरिक पक्ष सम्मिलत होता हैं अर्थात् किसी बालक के शरीर की ऊँचाई, आकार तथा भार आदि प्रक्रमों परिवर्तन देखा जाता हैं, अभिवृद्धि कहलाती हैं।
  फेंक महोदय के अनुसार "अभिवृद्धि cellular Multiplication अर्थात कोशकीय वृद्धि कहा हैं।
- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में शारीरिक पक्ष में लम्बाई, चौड़ाई भार इत्यादि सम्मिलित होते हैं।
- विकास - बालक विकास की प्रक्रिया में विकास के अन्तर्गत किसी बालक का सम्पूर्ण विकास सम्मिलित होता हैं।
- इस विकास की प्रक्रिया के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक सामाजिक आदि सभी विकास सम्मिलित होते हैं।
- इसके अतिरिक्त अप्रत्यक्ष रूप से विकास की प्रक्रिया में नैतिक, चारित्रिक तथा भावात्मक विकास इत्यादि में सम्मिलित होते हैं।
- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास तथा विकास की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास में अन्तर पाया जाता हैं।
- अभिवृद्धि का शारीरिक विकास केवल वृद्धि (बढना) तथा क्षय (घटना) को प्रदर्शित करता हैं। जबकि विकास का शारीरिक विकास वृद्धि तथा क्षय को प्रदर्शित करता हैं।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अभिवृद्धि तथा विकास में अन्तर

अभिवृद्धि	विकास
• अभिवृद्धि किसी बालक के केवल शारीरिक पक्षों से सम्बंधित हैं।	• विकास की प्रक्रिया से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक सभी विकास होता हैं।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया एक निश्चित समय अर्थात जन्म से लेकर एक निश्चित समय तक चलती हैं	• विकास की प्रक्रिया जन्म से लेकर जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया हैं।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया एकाकी होती हैं।	• विकास की प्रकिया का द्रष्टिकोण सर्वांगीण होता हैं।
• अभिवद्धि परिमाणात्मक रूप को परिवर्तित करती हैं।	• विकास की प्रक्रिया बालक के गुणात्मक रूप को व्यक्त करती हैं।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता हैं।	• विकास की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा नही जा सकता हैं।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया को मापा – तौला जा सकता हैं।	• विकास की प्रक्रिया को मापा तौला नही जा सकता हैं।
• अभिवृद्धि का घटक जन्म जात होता हैं।	• विकास का घटक अर्जित होता हैं।
• अभिवृद्धि की प्रक्रिया विकास के अंतर्गत सम्मिलित होती हैं।	• विकास की प्रक्रिया अभिवृद्धि के अंतर्गत सम्मिलित नही होती हैं।

विकास के सिद्धान्त

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक विकास
3. सामाजिक विकास
4. संवेगिक विकास

5. नैतिक विकास

6. चारित्रिक विकास

7. भावात्मक विकास

I. निरन्तर विकास का सिद्धांत

विकास की विभिन्न गति का .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

- **शारीरिक विकास शैशवावस्था में –**

1. शैशवावस्था अंग्रेजी भाषा के in fancy शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह शब्द लैटिन भाषा के Infast से बना है। जो In + Fast से तात्पर्य है नहीं बोलने की अवस्था कहा जाता है। इस समय में बालक ज्यादातर रोने का कार्य करता है। जो निरर्थक माना जाता है।

2. शैश्वावस्था मानव विकास की आधारशिला एवं नीव तैयार होती है। इस काल को जीवन का आधार काल अथवा जीवन का आदर्श काल कहा जाता है।
3. शैश्वावस्था के काल में बालक/बालिका में संचय की प्रवृत्ति पायी जाती है। जिस कारण इसे जीवन का संचयी काल कहा जाता है।
4. इसका समय जन्म - 6 वर्ष तक होता हैं । जिसमें किसी भी बालक का शारीरिक विकास अन्य विकास की अपेक्षा तीव्र होता हैं ।

भार (Weight)

शैश्वावस्था में जन्म से लेकर अंतिम अवस्था अर्थात 6 वर्ष की आयु तक बालको का भार बालिकाओ की अपेक्षा अधिक हो जाता हैं ।

लम्बाई - जन्म के समय किसी बालक की लम्बाई $20\frac{1}{2}$ इंच तथा बालिकाओ की लम्बाई 20 इंच के आसपास होती है। किन्तु दोनों की .....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

अध्याय – 6

बालकों में चिंतन (Thinking)

= चिंतन एक मानसिक प्रक्रिया है जो सभी प्राणियों में होती है ।

= चिंतन एक उच्च ज्ञानात्मक प्रक्रिया है ।

= चिंतन एक अव्यक्त मानसिक प्रक्रिया है ।

= चिंतन प्रक्रिया की शुरुआत उस समय होती है जब प्राणी के समक्ष कोई समस्या आती है अर्थात चिंतन एक मध्यस्थ प्रक्रिया है :-

उद्दीपक - चिंतन - अनुक्रिया

= चिंतन में अभिप्रेरणा का विशेष महत्व है ।

= चिंतन में गत अनुभूति भी सम्मिलित होती है ।

= चिंतन स्थूल से सूक्ष्म की ओर होता है ।

= चिंतन में विश्लेषण एवं संश्लेषण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।

= चिंतन अत्यंत जटिल प्रक्रिया है ।

= चिंतन के द्वारा एक विशेष प्रकार की बुद्धि उत्पन्न होती है । जिसे कृत्रिम बुद्धि कहते हैं।

कॉलसनिक के अनुसार "संकल्पनाओं का पुनर्गठन ही चिंतन है"

क्रो एवं क्रो - " किसी बालक में चिंतन की योग्यता उसके सफल जीवन का मूलभूत आधार है ।"

रॉस के अनुसार - " चिंतन ज्ञानात्मक पक्ष की एक मानसिक क्रिया है ।"

चिंतन के प्रकार

1. प्रत्यक्षात्मक एवं मूर्त चिंतन - बालक में सर्वप्रथम प्रत्यक्षात्मक चिंतन का विकास प्रारंभ होता है जब बालक किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना के प्रत्यक्षीकरण से विचार-विमर्श करता है तो .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

FREE SAMPLE

अध्याय – II

राष्ट्रीय पाठचर्या संरचना – 2005 (एन. सी. एफ. – 2005)

एन. सी. एफ. – 2005 :-

परिचय :- यह विद्यालय शिक्षा पर अब तक का नवीनतम राष्ट्रीय दस्तावेज है। जिसे राष्ट्रीय स्तर पर के शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, विषय विशेषज्ञ**ओं** व अध्यापकों नें मिल कर तैयार किया है।

भारत सरकार के एम. एच. आर.डी. की पहल पर प्रो. यशपाल की अध्यक्षता में देश के चुने हुये 23 विद्वानों ने विद्यालयी शिक्षा पर हुये पिछले सभी विचार - विमर्शों का अध्ययन किया और उन्हें नई राष्ट्रीय चुनौतियों की रोशनी में देखा। इस राष्ट्रीय मशवरे से निकले 3 क्षेत्रों पर बाहर से 13 सदस्यों वाले 21 फोकस समूहों ने विचार किया और एन. सी. एफ. - 2005 को आकार दिया।

एन. सी. एफ. - 2005 दस्तावेज निम्नलिखित 5 मार्गदर्शन सिद्धांत प्रस्तुत करता है :-

- ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।
- पढ़ने की रटन्त प्रणाली से मुक्त करना।
- पाठचर्या को इस तरह आगे बढ़ाना कि वह बच्चों के चहुँमुखी विकास के अवसर दें, न कि पाठ्यपुस्तक केन्द्रित बनकर रह जाये।
- परीक्षा को पहले की तुलना में अधिक लचीला बनाना और उसे कक्षा - कक्ष की गतिविधि से जोड़ना।
- बच्चों का ऐसे नागरिकों के रूप में विकास जिनमें प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय मूल्यों (लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षताव समानता) में आस्था हो।

अन्य प्रमुख विशेषताएं :-

- सीखना अपने आप में एक सक्रिय व सामाजिक गतिविधि है। सीखने सिखाने में निम्नलिखित सिद्धांतों पर बल देने की जरूरत है :- " ज्ञात से अज्ञात", "मूर्त से अमूर्त", "स्थानिक से वैश्विक की ओर।"
- सीखने की एक उचित गति होनी चाहिए इसमें बच्चों के दिल दिमाग़ को रौंदने वाली तेजी नहीं होनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि बच्चे अवधारणाओं को रटकर परीक्षा करें और फिर उन्हें भूल जायें सीखने में विविधता और चुनौतियां होनी चाहिए ताकि वे बच्चों को रोचक लगे और उन्हें व्यस्त रखें।
- शिक्षा सार्थक तभी है जब व्यक्ति को इतना समर्थ बना सके कि वह शान्ति को जीवन शैली के रूप में चुन सके लेकिन वह सामाजिक संघर्षों का एक मूक दर्शक बन कर न रह जाये।
- सूचना को ज्ञान मानने से बचना चाहिए।
- स्कूलों में पढाई तब तक आनंददायक नहीं हो सकती जब तक बच्चों के प्रति हम अपना यह नजरिया न बदलें के वे मात्र ज्ञान लेने वाले हैं।
- मोटे पाठ्यक्रम मोटी किताबें शिक्षा प्रणाली की असफलता का प्रतीक है। इन्हें बनाने और लिखने वाले इस धारणा से प्रेरित हैं कि दुनिया में ज्ञान का एक विस्फोट हुआ है।
- लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा व मानव अधिकार हमारे सामाजिक मूल्य हैं इन्हें उपदेश देकर नहीं बल्कि वातावरण देकर बच्चों के मन में बोने की जरूरत है।
- बाल केंद्रित शिक्षा का अर्थ बच्चों के अनुभवों, उनके स्वरों और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना है।

बच्चे उसी वातावरण में सीख .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान कंप्यूटर**

अनुदेशक (शिक्षक) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (शिक्षक)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	कट ऑफ
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	64 (84.9 M.)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	117
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	117
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	Not declared yet

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	89 of 160	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLEE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

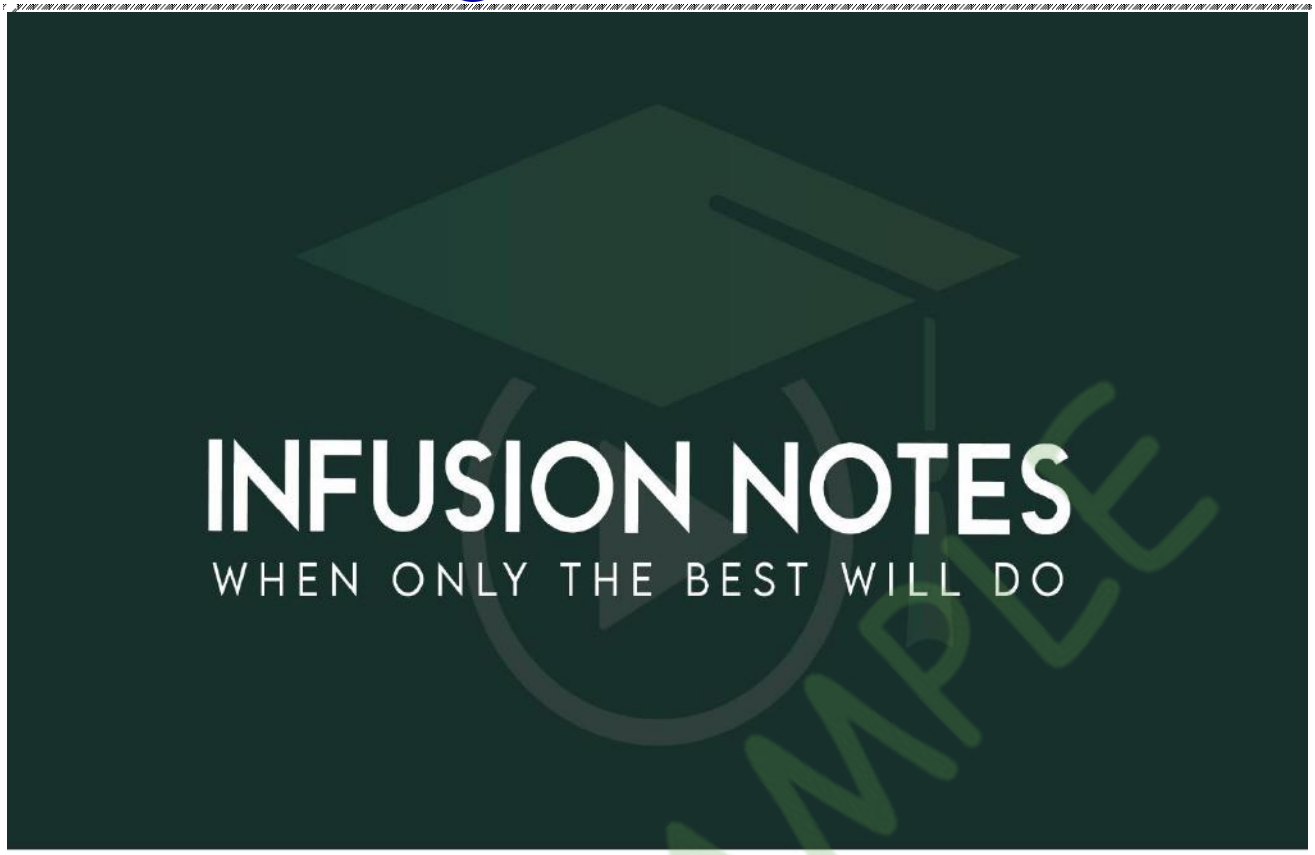

FREE SAMPLE

AVAILABLE ON/

01414045784

contact@infusionnotes.com

http://www.infusionnotes.com/